विशद

आकाश पंचमी विधान

मुक्तावली पूजन विधान

सुख चिंतामणि विधान पूजन

सिद्धभगवान परमेष्ठी

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति, कुशल काव्य सृजेता, साहित्यकार

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

विशद
आकाश पंचमी विधान

"माण्डला"

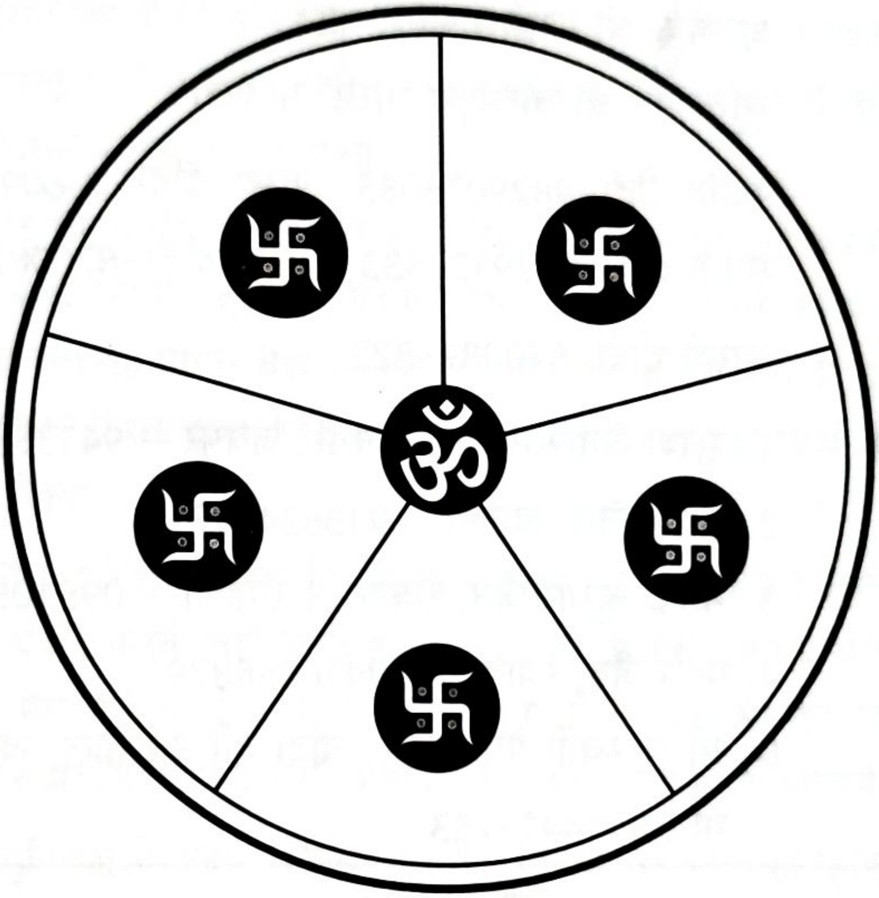

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री आकाशपंचमी व्रत कथा

व्रतकर आकाश पंचमी, वणिक सुता ने जान।
विशद सुखों को प्राप्त कर, पाया पद निर्वाण।।

आर्यखण्ड के सोरठ देश में तिलकपुर नाम का एक विशाल नगर था। वहाँ महीपाल नाम का राजा और विचक्षणा नामक रानी थी। उसी नगर में भद्रशाल नाम का व्यापारी रहता था उसकी नन्दा नाम की स्त्री से विशाला नाम की पुत्री उत्पन्न हुई।

यद्यपि वह कन्या अत्यन्त रूपवान थी, तथापि इसके मुख पर सफेद कोढ़ हो जाने से सारी सुन्दरता नष्ट हो गई थी। इसलिए उसके माता-पिता तथा वह कन्या स्वयं भी रोया करती थी, परन्तु कर्मों से क्या वश है? निदान माता के उपदेश से पुत्री धर्मध्यान में रत रहने लगी, जिससे कुछ दुःख कम हुआ।

एक दिन एक वैद्य आया और उसने सिद्धचक्र की आराधना करके औषधि दी जिससे उस कन्या का रोग दूर हो गया। तब उस भद्रशाल ने अपनी कन्या उसी वैद्य को ब्याह दी। पश्चात् वह पिंगल वैद्य इस विशाला नाम की वणिक पुत्री के साथ कितने ही दिन पीछे देशाटन करता हुआ, चित्तौड़गढ़ की ओर आया, वहाँ पर भीलों ने उसे मारकर सब धन लूट लिया।

निदान विशाला वहाँ से पति और द्रव्य रहित हुई नगर के जिनालय में गई और जिनराज के दर्शन करके वहाँ तिष्ठे हुए श्री गुरु को नमस्कार करके बोली- मैं अनाथनी हूँ, मेरा सर्वस्व खो गया, पति भी मारा गया और द्रव्य भी लूट गया। मुझे कुछ भी नहीं सूझता है कि क्या करूँ, कृपाकर कुछ कल्याण का मार्ग बताइये।

तब मुनिराज ने कहा - बेटी सुनो, यह जीव सदैव अपने ही पूर्वकृत कर्मों का शुभाशुभ फल भोगता है। तू प्रथम जन्म में इसी नगर में वेश्या थी। तू रूपवान तो थी ही, परन्तु गायन विद्या में भी निपुण थी।

एक समय सोमदत्त के मुनिराज यहीं आये। यह सुनकर नगर के लोग वंदना को गये और बहुत उत्साह से उत्सव किया तो जैसे सूर्य का प्रकाश उल्लू को अच्छा नहीं लगता, उसी प्रकार कुछ मिथ्यात्वी विधर्मी लोगों ने मुनि से वाद-विवाद किया और अन्त में हराकर देश्या (तुझे ही) को मुनि के पास ठगने के लिए (भ्रष्ट करने को) भेजा तो तो तूने पूर्ण स्त्री चरित्र फैलाया, सब प्रकार रिझाया, शरीर का आलिंगन भी किया, परन्तु जैसे सूर्य पर धूल फेंकने से सूर्य का कुछ बिगड़ता ही नहीं किन्तु फेंकने वाले ही का उल्टा

बिगाड़ होता है उसी प्रकार मुनिराज तो अचल मेरुवत स्थिर रहे और तू हार मानकर लौट आई।

इससे इन मिथ्यात्वी अधर्मियों को बड़ा दु:ख हुआ और तुझे भी बहुत पश्चाताप हुआ। अन्त में तुझे कोड हो गया सो दु:खित अवस्था में मरकर तू चौथे नर्क गई। वहाँ से आकर तू यहाँ वणिक के घर पुत्री हुई है। यहाँ भी तुझे सफेद कोढ़ हुआ था। सो पिंगल वैद्य ने तुझे अच्छा किया और उसी से तेरा पाणिग्रहण भी हुआ था।

पश्चात् पूर्व पाप के उदय से चोरों ने उसे मार डाला और तू उससे बचकर यहाँ तक आई है। अब यदि तू कुछ धर्माचरण धारण करेगी, तो शीघ्र ही इस पाप से छूटेगी।

यह व्रत भादों सुदी 5 को किया जाता है। इस दिन चार प्रकार का आहार त्यागकर उपवास धारण करे और अष्ट प्रकार के द्रव्य से श्रीजिनालय में जाकर भगवान का अभिषेकपूर्वक पूजन करे। तीनों समय महामंत्र नवकार के 108 जाप करे। इस प्रकार 5 वर्ष तक करे। जब व्रत पूरा हो जावे तो उत्साह सहित उद्यापन करे। परम्परा में भगवान सुमतिनाथ की पूजा एवं जाप्य करते हैं – ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

छत्र, चमर, सिंहासन, तोरण, पूजन के बर्तन आदि प्रत्येक 5 (पांच) नग मंदिर में भेंट करे और कम से कम पांच शास्त्र पधरावे। चार प्रकार के संघ को चारों प्रकार का दान देवे और भी विशेष प्रभावना करे। इस प्रकार विशाला कन्या ने श्रद्धापूर्वक बारह व्रत स्वीकार किये और इस आकाशपंचमी व्रत को भी विधि सहित पालन किया। पश्चात समाधिमरण कर वह चौथे स्वर्ग में मणिभद्र नाम का देव हुआ।

वहाँ उसने देवाँगनाओं सहित क्रीड़ा करते हुए अनेक तीर्थों के दर्शन, पूजा, वंदना तथा समवसरण आदि की वंदनाँ की। इस प्रकार सात सागर की आयु पूर्ण कर उज्जैन नगर में प्रियंगुसुन्दर नामक राजा के यहाँ तारामती नामक रानी से सदानंद नामक पुत्र हुआ, सो कितने काल राज्योवित सुख भोगे।

पश्चात एक दिन नगर के बाहर वन में मुनिराज के दर्शन कर और उनके मुख से संसार से पार उतारने वाला धर्म का उपदेश सुनकर उसने वैराग्य को प्राप्त होकर जिनदीक्षा अंगीकार की और शुक्लध्यान के बल से केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षपद प्राप्त किया।

इस प्रकार विशाला नाम की वणिक कन्या ने व्रत के प्रभाव से स्वर्ग और मोक्षपद प्राप्त किया, तो यदि श्रद्धा सहित अन्य जीव यह व्रत पालेंगे तो क्यों न उत्तम सुखों को प्राप्त होवेंगे ? अवश्य होंगे।

आकाश पंचमी स्तवन

(चाल-छन्द)

श्री ''ऋषभ'' देव कहलाए, जो धर्म प्रवर्तक गाए।।1।।
हे ''अजित'' कर्म के जेता, कर्मों के आप विजेता।।2।।
हे ''सम्भव'' नाथ हमारे, बन जाओ प्रभू सहारे।।3।।
''अभिनन्दन'' हे शिवगामी, तुम चरणों में प्रणमामी।।4।।
''सुमति'' सुमति के दाता, इस जग के भाग्य विधाता।।5।।
श्री ''पद्मप्रभ'' को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।
जनवर ''सुपार्श्व'' कहलाए, अतिशय महिमा को पाए।।7।।
हे ''चन्द्र'' सुलक्षण धारी, श्री चन्द्रप्रभु अविकारी।।8।।
श्री ''पुष्पदंत'' जिन स्वामी, त्रिभुवनपति अन्तर्यामी।।9।।
प्रभु ''शीतल'' नाथ कहाए, जो शील सम्पदा पाए।।10।।
हे जग को श्रेय प्रदाता, ''श्रेयांस'' नाथ जग त्राता।।11।।
जो ''वासुपूज्य'' को ध्याये, वह विशद पूज्यता पाए।।12।।

(दोहा)

''विमल नाथ'' के ध्यान से, बने विमल गुणवान।।13।।
गुणानन्त के कोष हैं, ''जिनानंत'' भगवान।।14।।
धर्म ध्वजा धारी हुए, ''धर्म नाथ'' तीर्थेश।।15।।
''शांति'' प्रदायक शांति जिन, जग में हुए महान।।16।।
''कुन्थु'' नाथ जी ने दिया, जग को सद् संदेश।।17।।
शिव पद के राही बने, ''अरहनाथ'' भगवान।।18।।
मोह मल्ल को जीतकर, बने ''मल्लि'' तीर्थेश।।19।।
व्रत धारण करके बने, ''मुनि सुव्रत'' भगवान।।20।।
आठों कर्म विनाश कर, बने श्री ''नमिनाथ''।।21।।
धर्म नेमि को धारकर, बने ''नेमि'' तीर्थेश।।22।।
उपसर्गों पर जय किए, ''पार्श्वनाथ'' भगवान।।23।।
विशद ज्ञान धारी हुए, ''महावीर'' तीर्थेश।
सुर नर मुनि जिनके चरण, अर्चा करें विशेष।।24।।

दोहा - तीर्थंकर चौबिस हैं, महिमामयी महान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हैं गुणगान।।25।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

आकाश पंचमी विधान

स्थापना

व्रत आकाश पंचमी पावन, करते हैं जो जीव महान।
चौबिस तीर्थंकर की अर्चा, खुले गगन में करें प्रधान।।
भादों शुक्ल पंचमी का व्रत, पाँच वर्ष करते शुभकार।
सुख शांती सौभाग्य मयी हो, उनका जीवन मंगलकार।।

दोहा - कर्म घातिया से रहित, तीर्थंकर भगवान।
जिनकी अर्चा को हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम-छन्द)

नीर यह चढ़ा रहे भगवान, रोग जन्मादिक नशे प्रधान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते गंध सुगन्धी वान, मिटे मेरा भव रुज भगवान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत आभावान, प्राप्त हो अक्षय सुपद महान।
पूजते समुतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प से आए परम सुवास, काम रुज का हो जाए नाश।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुचरु यह लाए हम रसदार, क्षुधा का होवे अब संहार।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप यह घृत का लिया प्रजाल, मोह का नशे पूर्णतः जाल।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नि मे खेने लाए धूप, कर्म नश पाएँ सुपद अनूप।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।7।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

सरस फल चढ़ा रहे भगवान, मोक्ष फल पाएँ महित महान।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निव. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाकर पाएँ सुपद अनर्घ्य।
पूजते सुमतिनाथ तीर्थेश, वन्दना चरणों करें विशेष।।9।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

दोहा – शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
तीर्थंकर जिन के चरण, अतिशय बारम्बार।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा – पुष्पांजलि करते प्रभो !, पाने पुष्प पराग।
रत्नत्रय निधि प्राप्त हो, बुझे राग की आग।।

।। पुष्पांजली क्षिपेत् ।।

जिन आराधना

दोहा – व्रत आकाश पंचमी करें, जग में जो भी जीव।
शिवपद दायी प्राप्त हो, उनको पुण्य अतीव।।

।। पुष्पांजली क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर श्री सुमतिजिन, अतिशय पूज्य त्रिकाल।
आकाश पंचमी सुव्रत की, गाते हैं जयमाल।।

(चौपाई–छन्द)

देश कहा सौराष्ट्र महान, नगर तिलक पुर रहा प्रधान।
महीपाल राजा नरनाथ, थी विलक्षणा रानी साथ।।1।।
भद्रशाह व्यापारी जान, नन्दा स्त्री उसकी मान।
कन्या हुई विशाला नाम, स्वेत कुष्ट से दुखी तमाम।।2।।
एक वैद्य आया तव पास, सिद्ध चक्र अर्चा की खास।
दी औषधि कन्या का रोग, दूर हुआ वह हुई निरोग।।3।।

पिता ने वैद्य से किया विवाह, फिर परदेश की ली जो राह।
स्त्री ले चित्तोड़ की ओर, लोग वैद्य को मारे जोर।।4।।
विधवा हुई विशाल अनाथ, धनपति का तब छूटा साथ।
गई जिनालय मुनि के पास, मुनिवर उसे दिलाए आस।।5।।
कर्मों का फल पाए जीव, कर्मोदय तव रहा अतीव।
पूर्व जन्म की वेश्या आप, कर उपसर्ग मुनी पर पाप।।6।।
बाँधा उसके फल से जान, कुष्ट रोग यह हुआ प्रधान।
अब पालन कर धर्माचार, जिससे होगी तूं भव पार।।7।।
व्रत आकाश पंचमी जान, भादों सुदि पाँचें को मान।
तज आहार धरें उपवास, श्री गुरु या जिनवर के पास।।8।।
चौबिस जिन की प्रतिमा जान, भक्ती करे खुले स्थान।
महामंत्र का करके जाप, पाँच वर्ष तक पालें आप।।9।।
किया विशाला व्रत शुभकार, मन में अतिशय श्रद्धाधार।
उज्जैनी का राजा जान, प्रियंगु सुन्दर जिसका नाम।।10।।
रानी तारामति से मान, हुआ नन्द सुत अति गुणवान।
राज्यादिक सुख करके भोग, अन्त में धारा उसने योग।।11।।
फिर वह पाया शुक्ल ध्यान, अन्त में पाया पद निर्वाण।
व्रत जो पालन करें कराएँ, वे भी मोक्ष महाफल पाएँ।। 12।।

दोहा - यह आकाश पाँचे सुव्रत, धार विशाला जान।
सुन्दर तन धन पा मिला, अगले भव निर्वाण।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - जिनवर की आराधना, करते हैं जो जीव।
शिवपद कारी जीव वें, पावें पुण्य अतीव।।

।। इत्याशीर्वादः।।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम वर्ष पूजन

स्थापना

तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी, कहे गये हैं पूज्य महान।
व्रताराध्य आकाश पंचमी, का हम करते हैं गुणगान।।
तीन लोक में भवि जीवों को, करने वाले सुमति प्रदान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, जिनका हम करते आह्वान।।

दोहा – आप हमारे देवता, पृथ्वी पति भगवान।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत प्रथम वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ताटंक छन्द)

समता जल से कर्म कालिमा, नष्ट किए हैं जिनस्वामी।
जन्म जरादिक नाश प्रभू जी, आप हुए अन्तर्यामी।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

हम संतप्त हुए हे स्वामी!, राग द्वेष की ज्वाला से।
त्रस्त हुए भटके चारों गति, पाप कर्म की हाला से।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हं सर्व पूज्येसु जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय निधि के स्वामी हो प्रभु, अक्षय पद जग को देते।
भक्ती करने वाले भक्तों को, भी निज सम कर लेते।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

कामदेव के वश होकर के, सुर नर हरि ब्रह्मा हारे।
याचक बनकर कामदेव भी, प्रभु की भक्ती स्वीकारे।।

सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

क्षुधा वेदना के वश हो नर, सब कुछ ही खो देते हैं।
मोहित होकर के भोजन में, निज से च्युत हो लेते हैं।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ चेतन की माया में फँस, सबको अपना मान रहे।
जाल रचा है भव वर्धन का, उसको सच्चा जान रहे।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप गंध में रमे रहे निज, गंध नहीं हमने पाई।
सिद्धों सम गुण के धारी हम, कर्मों की जिस पर काई।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ताजे हम सरस चढ़ाकर, जगतीपति पद सिरनाएँ।
शिवनारी के शिव राही की, अर्चा कर शिव पद पाएँ।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निव. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, जिनवर की महिमा गाएँ।
शिवपद के राही बनकर के, मोक्ष महा पदवी पाएँ।।
सुमतिनाथ की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे।
अब छोड़ के यह संसार बास, हम भी शिवपुर को जाएँगे।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

प्रथम वर्ष का अर्घ्य

दोहा - सुमतिनाथ जिनवर करो, हमको सुमति प्रदान।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान।।

।। मण्डस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

सुमतिनाथ पंचम तीर्थंकर, परम सुमत के धारी हैं।
व्रताराध्य आकाश पंचमी, के पद ढोक हमारी है।।
पंचकल्याणक प्राप्त किए प्रभु, पंचम गति को पाए हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, चरण शरण में आए है।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत प्रथम वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सुमतिनाथ जिन देव जी, नाशे कर्म कराल।
श्री जिन पद की आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(ताटंक-छन्द)

विशद ज्ञान जगते ही प्रभु की, प्रथम देशना जब बिखरी।
इन्द्र स्वयं विस्मित हो सुनता, प्रभु से जो शुभ ध्वनी खिरी।।
सहस्राष्ट चक्षू धारण कर, सहस नाम को ध्याता हैं।
समवशरण में श्री जिनेन्द्र की, भाव से स्तुति गाता हैं।।1।।
नाम मंत्र हैं प्रभु के पावन, भव्य जीव जो ध्याते हैं।
अतिशय पुण्य प्राप्त करते वे, सत् श्रद्धान जगाते हैं।।
नाम जाप मंगलमय प्रभु का, सारे विघ्न विनाश करें।
रोग शोक सब आधि व्याधियाँ, क्षण में सारी नाश करें।।2।।
जीवन मंगलमय हो जाए, सुख शांती सौभाग्य जगें।
धर्म परायण होवें प्राणी, मोक्ष मार्ग में आप लगें।।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, सुर नर इन्द्र शरण आते।
अर्चा करते भक्ति भाव से, विशद चरण में सिरनाते।।3।।

दोहा - अर्चा की है भाव से, करने भाव विशुद्ध।
कर्मास्रव मेरा विशद, हो जाए अवरूद्ध।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत प्रथम वर्षे श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा - भक्ति भाव से भक्त जो, करते हैं गुणगान।
जिन अर्चा कर शीघ्र ही, हो उनका कल्याण।।

।। इत्याशीर्वादः।।

द्वितीय वर्ष पूजन

स्थापना

सुमतिनाथ जिन सुमति के दाता, करने वाले सुमति प्रदान।
सुमति के धारी सुमतिनाथ के, दर पे पावें सुमति महान।।
सुमति धारकर सुमति के द्वारा, होते सुमतिज्ञान के ईश।
सुमति ज्ञान चारित्र प्राप्त कर, बनते जगतिपति जगदीश।।

दोहा – सुमतिनाथ भगवान, सुमति करें संसार में।
करते हम आह्वान, सुमति दीजिए हे प्रभो!।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत द्वितीय वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पूजा (पद्धरि-छन्द)

प्रभु चढ़ा रहे हैं यहाँ नीर, अब जन्मादि की मिटे पीर।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

हम चढ़ा रहे शुभ यहाँ गंध, हो कर्मास्रव अब शीघ्र बंद।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत ये रहे श्वेत, पद पाएँ हम शुभ गुणोपेत।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

शुभ चढ़ा रहे हैं यहाँ फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यहाँ आन, हो क्षुधा रोग की पूर्ण हान।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ दीप जलाते यहाँ आज, अब नश जाए मम मोह राज।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु जला रहे हैं श्रेष्ठ धूप, हम पद पाएँ अतिशय अनूप।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाते हैं विशेष, हम पाएँ शिवपद हे जिनेश!।
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

यह चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो विशद प्राप्त हमको अनर्घ्य
हम अर्चा करते यहाँ नाथ, दो मोक्षमार्ग में हमें साथ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पूर्व आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वर्ष का अर्घ्य

दोहा – करने जिन आराधना, पुष्प लिए यह हाथ।
पुष्पांजलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

।। मण्डस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

द्वितिय वर्ष आकाश पंचमी, व्रत करके त्यागें आरंभ।
विशद भाव कर व्रत के धारी, छोड़ें राग द्वेष छल दम्भ।।
पंचकल्याणक प्राप्त किए प्रभु, पंचम गति को पाए हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, चरण शरण में आए है।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत द्वितीय वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – व्रत आकाश पाँचे रहा, शिवपथ का सोपान।
जयमाला गाते विशद, पाएँ पद निर्वाण।।

(चौपाई)

जयवन्तों तीर्थेश निराले, भव दुख को प्रभु हरने वाले।
पहले सद् श्रद्धान जगाते, पंच महाव्रत फिर अपनाते।।1।
होते पंच समिति के धारी, मुनि होते इन्द्रिय जयकारी।
षट् आवश्यक पालन करते, शेष सप्त गुण भी आचरते।।2।।
होते मुनि रत्नत्रय धारी, विषयाशा त्यागी अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, अतिशय कर्म निर्जरा पाते।।3।।
कर्म घातिया आप नशाते, पावन केवल ज्ञान जगाते।
छियालिस मूल गुणों के धारी, अर्हत् होते जग उपकारी।।4।।

दिव्य देशना आप सुनाते, सारे जग में पूजे जाते।
शुक्ल ध्यान कर कर्म नशाते, मोक्ष महल में धाम बनाते।।5।।
भव्य जीव जो अर्चा करते, उनके संकट क्षण में हरते।
नाथ ! आप हो जग हितकारी, भविजन के पावन सुखकारी।।6।।

दोहा - अर्चा करते आपकी, विशद भाव के साथ।
मोक्ष मार्ग में बढ़ सकें, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत द्वितिय वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - जिन अर्चा करके मिले, मोक्ष महल का द्वार।
अतः वंदना भाव से, करते बारंबार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

तृतीय वर्ष पूजन

स्थापना

व्रताराध्य आकाश पंचमी, के जिन गाए सुमति जिनेश।
भव्य जीव जिन सुमतिनाथ की, भाव से अर्चा करें विशेष।।
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त हो, व्रत का फल यह रहा महान।
व्रताराध्य तीर्थंकर जिन का, करते हैं हम भी आह्वान।।

दोहा - नेता मुक्ती मार्ग के, करते जग उपकार।
चरण कमल में आपके, वन्दन बारंबार।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रत तृतीय वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज-माता तू दया करके.....

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नही जाए, प्रभु मैटो द्वेष अहा।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

तन धन परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
इस मोहवली ने प्रभु, निज की सुधि विसराई।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की आंधी से, चेतन ग्रह विखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।
हे सुमतिनाथ स्वामी!, हम तुमको ध्याते हैं।
हम शिवपदवी पायें, पद शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वर्ष का अर्घ्य

दोहा - करने जिन आराधना, पुष्प लिए यह हाथ।
पुष्पांजलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

।। मण्डस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

तृतिय वर्ष आकाश पंचमी, व्रत करके त्यागे आरंभ।
विशद भाव कर व्रत के धारी, छोड़ें राग द्वेष छल दम्भ।।
पंचकल्याणक प्राप्त किए प्रभु, पंचम गति को पाए हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, चरण शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत तृतीय वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - जिनकी अर्चा कर सभी, कट जाते हैं पाप।
सुमतिनाथ भगवान का, करें स्मरण जाप।।

(ज्ञानोदय छन्द)

मंगलमय जिनराज हमारे, जिनकी भक्ती मंगल है।
मंगल नाथ! स्वयंभू गाए, हारी सर्व अमंगल है।।
मंगलमय है कीर्ति आपकी, नाम आपका मंगल है।
मंगलमय विश्वेश आप हैं, धाम आपका मंगल है।।1।।
मंगलमय स्वभाव है जिनका, दर्शन जिन का मंगल है।
जिनकी अर्चा मंगलमय है, चर्चा जिनकी मंगल है।।

मंगलमय स्वरूप आपका, ज्ञान आपका मंगल है।
मंगलमय छियालिस गुण पावन, ध्यान आपका मंगल है।।2।।
अनन्तचतुष्टय मंगल गाए, प्रातिहार्य भी मंगल है।
मंगलमय पूजा है जिनकी, सुख अव्यय भी मंगल है।।
मंगलमय आचार आपका, दिव्य देशना मंगल है।
समोश्रृति मंगलमय गाए, पावन अतिशय मंगल है।।3।।
जिन अर्चा औषधि है अनुपम, मंगलमय शुभ है जीवन।
मंगलमय गुण रहे आपके, दर्श विशद संजीवन है।।
आसख्यात आतम प्रदेश पर, नाम आपका अंकित है।
तन मन धन जीवन यह मेरा, चरण आपके अर्पित है।।4।।

दोहा - जिन अर्चा करके विशद, होवे पूरी आस।
शिवपथ का राही बने, पावे मुक्ती वास।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत तृतिय वर्षे श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - महिमा जिन की है अगम, गुण का नहीं है पार।
तीन लोक में जो रहे, भवदधि तारण हार।।

।। इत्याशीर्वाद: ।।

चतुर्थ वर्ष पूजन

स्थापना

छियालिस मूल गुणों के धारी, दोष अठारह रहित महान।
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, प्रकट करें प्रभु केवलज्ञान।।
दिव्य देशना ॐकार मय, करने वाले जग कल्याण।
भव्य जीव हे नाथ! आपका, उर में करते हैं आह्वान।।

दोहा - सुमतिनाथ भगवान की, महिमा का ना पार।
सुमति दीजिए हे प्रभो!, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत चतुर्थ वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पूजा (दोहा-छन्द)

जला रही हमको प्रभो!, राग आग की पीर।
पाने जल लाए विशद, भेद ज्ञान का नीर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

शीतल चन्दन से मिटे, इस तन का संताप।
प्रभु भक्ती मैटे विशद, लगा कर्म का ताप।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

भव सिन्धू से शीघ्र ही, पार उतारो नाथ!।
चढ़ा रहे अक्षत विशद, चरण झुकाते माथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

शील स्वभाव जगाइये, मदन दर्प अतिशूर।
भव तट नाव लगाइये, शिव पद से जो दूर।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

शांत करो जिनराज हे!, क्षुधा ज्वाल विकराल।
मिथ्या भ्रान्ती नाश हो, लाए चरु के थाल।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

स्व-पर तत्त्व प्रकाशनी, आतम ज्योति महान।
करो प्रज्ज्वलित हे प्रभो!, अन्तर दीप सुज्ञान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

भव-भव में भटके फिरे, कर्म बन्ध से नाथ!।
लोहे की संगति किए, अग्नि सहे घन घात।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों से संग्राम कर, पाएँ पद निर्वाण।
मुक्ती फल पाने विशद, करते हम गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चरण अर्पण करें, पद अनर्घ्य के हेतु।
श्रद्धा से पूजन करें, जिन भक्ती शिव सेतु।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वर्ष का अर्घ्य

दोहा - करने जिन आराधना, पुष्प लिए यह हाथ।
पुष्पांजलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

।। मण्डस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

चतुर्थ वर्ष आकाश पंचमी, व्रत करके त्यागें आरंभ।
विशद भाव कर व्रत के धारी, छोड़ें राग द्वेष छल दम्भ।।
पंचकल्याणक प्राप्त किए प्रभु, पंचम गति को पाए हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, चरण शरण में आए है।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत चतुर्थ वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – भक्तों के गाये प्रभु, आप स्वयं प्रतिपाल।
सुमतिनाथ जिनराज हे !, गातें हैं जयमाल।।

तर्ज–अहो जगत.....

जय जय जय जिनधर्म, जग में मंगलकारी।
भवि जीवों को श्रेष्ठ, गाया जो उपकारी।।
जय जय वस्तु स्वभाव, धर्म दयामय गाया।
जय जय दश विधि धर्म, भाव क्षमादि बताया।।1।।
जय जय दर्शन ज्ञान, चारित है शुभकारी।
रत्नत्रय शुभ धार्म, जग में मंगलकारी।।
जय जय जय जिनदेव, छियालिस गुण के धारी।
जय वीतरागता वान, पावन है अविकारी।।2।।
जय जय जय ऋषिराज, शुद्धोपयोग लगावें।
कर्म नाशकर आप, केवल ज्ञान जगावें।।
धन कुवेर तव श्रेष्ठ, समवशरण बनवाबें।
दिव्य देशना जीव, प्रभु की अतिशय पावें।।3।।
जागे मम सौभाग्य, जिनवर दर्शन पाएँ।
दर्श ज्ञान चारित्र, प्रभु पद विशद जगाएँ।।
आप नाम का जाप, करके तव गुण गाएँ।
नाथ ! आपके भक्त, चरणों शीश झुकाएँ।।4।।

दोहा – महिमा जिनकी है आगम, कोई ना पावे पार।
विशद भावना है यही, पावें भवदधि पार।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत चतुर्थ वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – जीते मोह कषाय जो, कियें कर्म का नाश।
शिवपथ के राही बने, पायें शिवपुर वास।।

।। इत्याशीर्वाद:।।

पंचम वर्ष पूजन

स्थापना (छप्पय छन्द)

सुमतिनाथ का भव्य जीव करते आराधन।
जगद्वन्द्य जग द्वन्द नाश, मुनि जन मन भावन।।
भव उच्छेदक नाथ!, आपको मन से ध्याएँ।
कर विशुद्ध परिणाम, हृदय में तुम्हे बसाएँ।।
सुमतिनाथ जिन लोक में, चूड़ामणी समान।
विशद हृदय में आपका करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रत पंचम वर्षे श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आतम अनुभव का निर्मल जल, निज भावों से लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नाश यह, करने तव पद आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ आतम अनुभव का चंदन, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
संसार ताप का नाश होय, प्रभु पद अर्चा को आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धोकर अक्षत निज अनुभव के, पूजा करने लाए हैं।
पद अक्षय पाने प्रभु चरणो, भाव बनाकर आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

हम शुद्धातम के विविध पुष्प, यह आज चढ़ाने लाए हैं।
हो काम रोग विध्वंश शीघ्र, प्रभु चरण शरण में आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य बनाए निज गुण के, प्रभु शरण आपकी आए हैं।
हो क्षुधा रोग उपशांत प्रभो!, सदियों से सतत सताए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम आत्म सुगुण प्रगटित करने, यह दीप जलाकर लाए हैं।
मिथ्यातम छाया जीवन में, हम उसे नशाने आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

हम कर्म आवरण नाश हेतु, यह धूप जलाने लाए हैं।
है अष्ट कर्म का कष्ट हमें, वह कष्ट मिटाने आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

हम चेतन की निधि भूल रहे, उसको प्रगटाने आए हैं।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, फल सरस चढ़ाने लाए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

निज आतम में गुण हैं अनन्त, वह भूल के जग भटकाए हैं।
अब अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ा, वह गुण पाने को आए हैं।।
सुमतिनाथ की अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाना है।
छोड़ के यह संसार वास अब, हम को भी शिव पाना है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आकाश पंचमी व्रताराध्य श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - सुमति प्राप्त होती विशद, नाथ आप के द्वार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

।। शान्तये शांतिधारा ।।

दोहा - पुष्पांजलि करते चरण, होकर भाव विभोर।
खुशियाँ छायें लोक में, अतिशय चारों ओर।।

।। इति पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

पंचम वर्ष का अर्घ्य

दोहा - करने जिन आराधना, पुष्प लिए यह हाथ।
पुष्पांजलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।।

।। मण्डस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

पंचम वर्ष आकाश पंचमी, व्रत करके त्यागें आरंभ।
विशद भाव कर व्रत के धारी, छोड़ें राग द्वेष छल दम्भ।।
पंचकल्याणक प्राप्त किए प्रभु, पंचम गति को पाए हैं।
जिनकी अर्चा करने को हम, चरण शरण में आए है।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत पंचम वर्ष श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - सुमति प्रदायक लोक में, सुमतिनाथ भगवान।
जयमाला गाते 'विशद', करते हम यशगान।।

(स्रग्विणी छन्द)

शुभ ज्ञान चक्षु से विशद, जिन दर्श जो करे।
वह दर्श ज्ञान चारित, शुभ रत्न को वरे।।
हे नाथ ! आप नाम को, हम भाव से यजें।
निज दिव्य ज्ञान ज्योति, के हेतु हम भजें।।1।।

जो अष्ट द्रव्य पाय, जिन अर्चना करे।
वह अर्चना को पाय, मुक्ति सुन्दरी वरे।।
हे नाथ !.......।।2।।
शुभ रत्न तीन से प्रभू का, ध्यान जो करे।
निज की विभाव कालिमा, को शीघ्र परिहरे।।
हे नाथ !.......।।3।।
जिनराज की शुभ भाव से, जो वन्दना करे।
उस भव्य भक्त की सभी, अभिवन्दना करे।।
हे नाथ !.......।।4।।
कीर्तन करे जिनेश का, जो भाव से अरे!
यश कीर्ति छाय लोक में, निज कर्म को हरे।।5।।

(घत्ता छन्द)

श्री जिन को ध्यायें, जिन गुण गाए, पाप नशाएँ भक्ति करें।
जिनवर अविकारी, मंगलकारी, ब्रह्म बिहारी, कर्म हरें।।

समुच्चय जयमाला

दोहा – त्रिभुवन पति कहलाये जो, पूज्य हैं तीनों काल।
सुमतिनाथ भगवान की, गाते हैं शुभ जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, अनन्त चतुष्टय के धारी।
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित, श्री जिनेन्द्र हैं अविकारी।।
देव रचित पार्थिव है पहला, 'तरु अशोक' है जिसका नाम।
देहाभा से परम प्रकाशित, 'भामण्डल' शोहे अभिराम।।1।।
रत्न जड़ित 'सिहांसन' पर प्रभु, चउ अंगुल ऊपर सोहें।
'चौंसठ चँवर' ढुरें जिन आगे, भव्यों के मन को मोहें।।
तीन लोक के नाथ! कहाए, 'क्षत्रत्रय' यह बतलाते।
देव प्रफुल्लित होकर नभ से 'पुष्प अनेकों बरसते'।।2।।
मोहनींद से जागो प्राणी, 'देव दुन्दुभि' बजवाते।
'दिव्य देशना' सुनकर प्रभु की, भव्य जीव खुशियाँ पाते।।
'चौंतिस' शुभ अतिशय के धारी, जग में पूजे जाते हैं।
सुर नर मुनि सब जिनके चरणों, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

नाथ! लोक में भेद ज्ञान बिन, जड़ वस्तू हमने चाही।
भाव जगा अब मेरे उर में, बनें मोक्ष के हम राही।।
दर्श किया जब से प्रभु हमने, आप स्वप्न में आते हैं।
आँखें बन्द करें या खोलें, दर्श आपका पाते हैं।।4।।

दोहा - प्रभू आपके नाम की, महिमा अगम अपार।
वर्णन की सामर्थ ना, करो भक्ति स्वीकार।।

ॐ ह्रीं आकाश पंचमी व्रत पंचम वर्षे श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - जिनकी अर्चा कर मिले, मन में शांति अपार।
सुमतिनाथ भगवान हैं, भवदधि ताराण हार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री सुमतिनाथ चालीसा

दोहा - नव देवों को पूजते, पाने को शिव धाम।
सुमतिनाथ के पद युगल, करते विशद प्रणाम।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव-विभोर।
हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

चौपाई

सुमतिनाथ के पद में जावे, उसकी मती सुमति हो जावे।।1।।
प्रभू कहे त्रिभुवन केस्वामी, जन-जन के हैं अन्तर्यामी।।2।।
अनुपम भेष दिगम्बर धारी, जिन की महिमा जग से न्यारी।।3।।
वीतराग मुद्रा है प्यारी, सारे जग की तारण हारी।।4।।
नगर अयोध्या मंगलकारी, जन्मे सुमतिनाथ त्रिपुरारी।।5।।
पिता मेघरथ जी कहलाए, मात मंगला जिनकी गाए।।6।।
वंश रहा इक्ष्वाकु भाई, महिमा जिसकी जग में गाई।।7।।
वैजयन्त से चयकर आये, श्रावण शुक्ल दोज शुभ पाए।।8।।
मघा नक्षत्र रहा मनहारी, ब्रह्ममुहूर्त पाए शुभकारी।।9।।
चैत्र शुक्ल ग्यारस दिन आया, जन्म प्रभु जी ने शुभ पाया।।10।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाए, जा सुमेरु पर न्हवन कराए।।11।।
चकवा चिन्ह पैर में पाया, सुमतिनाथ शुभ नाम बताया।।12।।

स्वर्ण रंग तन का शुभ जानो, धनुष तीन सौ ऊँचे मानो।।13।।
जाति स्मरण देखकर स्वामी, बने आप मुक्तीपथ गामी।।14।।
कार्तिक कृष्ण त्रायोदशी गाई, मघा नक्षत्रा पाए सुखदायी।।15।।
तेला का व्रत धारण कीन्हे, सहस्र भूप संग दीक्षा लीन्हे।।16।।
गये सहेतुक वन में स्वामी, तरुवर रहा प्रियंगू नामी।।17।।
पौष शुक्ल पूनम शुभकारी, हस्त नक्षत्र रहा मनहारी।।18।।
नगर अयोध्या में फिर आए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।।19।।
समवशरण तव देव बनाए, दश योजन विस्तार बताए।।20।।
गणधर एक सौ सोलह गाए, गणधर प्रथम वज्र कहलाए।।21।।
मुनिवर तीन लाख कहलाए, बीस हजार अधिक बतलाए।।22।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, कर्म नाश कर मुक्ती पाए।।23।।
कृपा करो भक्तों पर स्वामी, बनें सभी मुक्ती पथगामी।।24।।
इस जग के सारे सुख पाए, अन्तिम भव से मोक्ष सिधाए।।25।।
विनती चरणों विशद हमारी, बनो सभी के प्रभु हितकारी।।26।।
चालिस लाख पूर्व की स्वामी, आयू पाए शिवपद गामी।।27।।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अन्तर्यामी।।28।।
चैत्र शुक्ल दशमी शुभ गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती।।29।।
सहस्र मुनी सह मुक्ती पाए, अपने सारे कर्म नशाए।।30।।
अविचल कूट रहा शुभकारी, तीर्थ क्षेत्र पर मंगलकारी।।31।।
तीर्थ वन्दना करने आते, प्राणी अपने भाग्य सजाते।।32।।
सीकर जिला रहा शुभकारी, रैवासा में अतिशकारी।।33।।
प्रतिमा प्रगट हुई मनहारी, सुमतिनाथ की मंगलकारी।।34।।
दर्शन प्रभु का है सुखदायी, शांतीदायक है अति भाई।।35।।
कई ग्रामों में प्रतिमा प्यारी, शोभित होती है मनहारी।।36।।
दर्शन पाते हैं नर-नारी, श्री जिनवर का मंगलकारी।।37।।
जो भी प्रभु का दर्शन पाए, बार-बार दर्शन को आए।।38।।
हम भी प्रभू का ध्यान लगाएँ, निज आतम की शांति पाएँ।।39।।
सिद्ध शिला पर हम भी जाएँ, लौट के वापस फिर ना आएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालिस दिन, सद्श्रद्धा के साथ।
शांती मन में हो विशद, बने श्री का नाथ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

आरती

ओम जय महावीर प्रभो!

ॐ जय सुमतिनाथ स्वामी, स्वामी जय सुमति-
आरति करें तुम्हारी, हे अन्तर्यामी!-2।।टेक।।
नगर अयोध्या वैजयन्त से, चय कर प्रभु आए
पिता मेघरथ मात मंगला, घृह मंगल छाए।।1।।
श्रावण शुक्ल दोज को स्वामी, गर्भागम पाए -2
चैत्य शुक्ल ग्यारस को जन्म आप पाए।।2।।
मेरू सुगिरि पर शत इन्द्रों ने, शुभ अभिषेक किया।
कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि को प्रभु, संयम धार लिया।।3।।
धनुष तीन सौ ऊँचे हे प्रभु, स्वर्ण रंग पाए-2
चालिस लाख पूर्व की आयू, चकवा चिन्ह गाए।।4।।
पौष शुक्ल पूनम को, घाती कर्म क्षये-2
केवल ज्ञान जगाए, गिरि सम्मेद गये।।5।।
अविचल कूट से योग रोधकर, शिव पदवी पाए-2
आरति करने भक्त द्वार पे, विशद यहाँ आए।।6।।
दीन दुखी जो जीव जगत के, भाव सहित ध्याते-2
मन वांछित फल प्राणी, 'विशद' सभी पाते।।7।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे उत्तरप्रदेशे फरूखाबाद जिला अन्तर्गत कम्पिल जी अतिशय क्षेत्रे भादो मासे शुक्लपक्षे पंचमी सोमवासरे वीर निर्वाण सम्वत् 2546 वि.सं. 2077 विशद आकाश पंचमी विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

।। श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः ।।

विशद
मुक्तावली पूजन विधान

"माण्डला"

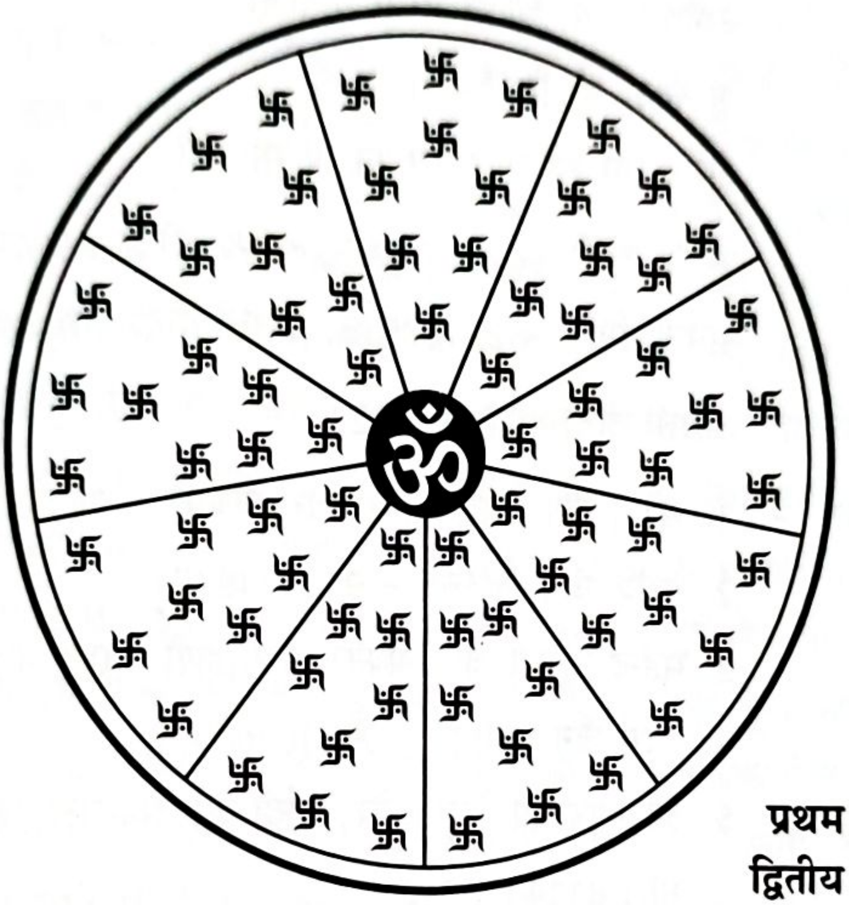

प्रथम कोष्ठ - 9
द्वितीय कोष्ठ - 9
तृतीय कोष्ठ - 9
चतुर्थ कोष्ठ - 9
पंचम कोष्ठ - 9
षष्ठ कोष्ठ - 9
सप्तम कोष्ठ - 9
अष्टम कोष्ठ - 9
नवम कोष्ठ - 9
कुल कोष्ठ - 81

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

मुक्तावली व्रत की कथा

दोहा - मुक्तावली व्रत जो करें, पावें शांति अपार।
विशद मोक्ष पद प्राप्त कर, होवें भवदधि पार।।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में मगध देश में राजग्रही नगरी में राजा श्रेणिक एवं रानी चेलना रहती थी, रानी धर्मपरायणा एवं शीलवति थी। एक दिन विपुलाचल पर महावीर भगवान का समवशरण आया दर्शन करने के लिए राजा रानी कुटुम्ब सहित गये दर्शन, पूजा, भक्ति कर समवशरण में बैठ गए बोले मेरी जिज्ञासा है, हे भगवन्! मुक्तावली व्रत क्या है? इसका फल क्या है? उसकी विधि किस प्रकार है? बतलाने की कृपा करें। तब गौतम गणधर ने आशीर्वाद देकर कहा कि सुनों-चम्पापुर नगरी के मध्य एक ब्राह्मण रहता था। उसका नाम सोमशर्मा था उसकी एक पुत्री थी, जो योवनावस्था को प्राप्त थी। वह जिन मंदिर में दर्शन को गई। वहां पर मुनिराज को देखकर मन में बुरे विचार कर खोटें शब्दों को कहने लगी नंगा वो जा रहा है, मन में ग्लानी कर पाप का बंध कर मरण करके नरक में गई। वहां नाना प्रकार के दुःखों को भोगकर मरण कर ब्राह्मण के घर में जन्म लिया उसका नाम निर्नामिका था। पूर्व पाप कर्मोदय के कारण उसके शरीर से अति दुर्गन्ध आती थी इसलिए उसका नाम दुर्गन्धा पड़ गया। धीरे धीरे बड़ी हुई भूख प्यास लगने से घर-घर की झूठन खाने जाने लगी बहुत कष्टों को भोगकर एक दिन मुनिराज के पास गई विनय पूर्वक दर्शन किए अपने पूर्व कर्मों के फल पूछने लगी। तब मुनिराज बोले- बेटी तुमने पूर्व में एक ब्राह्मण के घर में जन्म लिया था। तुमने मुनिराज को देखकर खोटे वचन बोले इसलिए तुम उसका फल भोग रही हो। दुर्गन्धा हाथ जोड़कर बोली उसके निवारण के लिए कोई व्रत बताने की कृपा करें। मुनिराज बोले- मुक्तावली के व्रत करके तुम अपने कष्टों का नाश कर सुख सम्पत्ति को प्राप्त कर सकती हो, हे मुनिराज! यह व्रत कब और किस तिथी में करना चाहिए। तब मुनिराज ने व्रत की विधि बताते हुए कहा-भादों सुदि सप्तमी को जिन मंदिर में या मुनिराज के समक्ष फल चढ़ाकर व्रत ग्रहण कर समारम्भ का त्याग कर उपवास करना। दूजा व्रत-अश्विन सुदी छठवी को, तीसरा व्रत-अश्विन वदी तेरस को, चौथा व्रत-अश्विन सुदी ग्यारस, पाँचवा व्रत-कार्तिक वदी वारस, छठवाँ

व्रत–कार्तिक शुक्ल तीज को, सप्तम व्रत कार्तिक सुदी ग्यारस को, आठवाँ व्रत–कार्तिक सुदी तेरस, नवमा व्रत–मंगसिर सुदि तीज को पूर्ण होता है। इस प्रकार यह व्रत 9 वर्ष तक मन वचन काय की शुद्धि पूर्वक पूर्ण करें। इसके पश्चात व्रत के उद्यापन में जिन मन्दिर में जिनाभिषेक करना माण्डना बनाना अष्ट द्रव्य से पूजा विधान करके मंदिर में 9 उपयोगी उपकरण रखना, शक्ति नहीं हो तो व्रत दूना करें। दुर्गन्धा ने मुनिराज के द्वारा कहे व्रतों की विधि सुनकर हर्षित होकर पूर्ण किया। वहां से मरणकर स्त्रीलिंग छेद कर प्रथम स्वर्ग में देव हुई। स्वर्ग से चयकर मथुरा में श्रीधर राजा के घर में पद्मरथ नाम का पण्डित हुई। वह एक बार वन में क्रीडा करने गया वहां मुनिराज के दर्शन कर धर्मोपदेश में मुनिराज ने कहा कि चम्पापुर में वासुपूज्य भगवान का समवशरण आया है। पण्डित ने समवशरण में जाकर दिव्य देशना सुनते ही वैराग्य प्राप्त कर जिन दीक्षा ग्रहण कर गणधर बनकर अष्ट कर्मों का नाशकर मोक्ष पद में गमन किया। जो श्रावक इस व्रत को विधि पूर्वक करता है वह सांसारिक सुख एवं स्वर्गों के सुखों को भोगकर निश्चिय ही कालान्तर में ''विशद'' मोक्ष पद को प्राप्त करता है।

निर्नामिका व्रत करके जान, बनी पद्मरथ विप्र महान।
गणधर बनी प्रभु पद आन, सुपद प्राप्त कीन्हा निर्वाण।।

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज ने अब तक लगभग सवा दो सौ प्रकार के विधानों की रचना की है उनमें एक यह है मुक्तावली व्रत विधान जो महानुभाव मुक्तावती व्रत करते हैं उन्हें उद्यापन के अवसर पर विचार करना पड़ता है कि कौनसा विधान करें उनकी यह समस्या समाप्त हुई और मुक्तावली जैसा नाम है मुक्त + आवली अर्थात् जो मुक्ती प्राप्त कराने वाले क्षण तक पहुँचाए वह मुक्तावली है जो मुक्ति के इच्छुक हैं वे यह विधान करके जीवन में विशद पुण्यार्जन करें।

मुक्तावली व्रत पूजन विधान

स्थापना

मुक्तीकर्मों से पाने को, मुक्तावलि व्रत करें विशेष।
मुक्तावलि के व्रताराध्य हैं, वासुपूज्य पावन तीर्थेश।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके प्रभु, दिए जगत को सद् उपदेश।
संयम नियम सार जीव का, दिए प्रभु जी यह संदेश।।

दोहा - स्वयं बुद्ध प्रभु आपने, अपनाया शिव पंथ।
करते हैं आह्वान हम, हे जिनवर! अरहंत।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। मत्तगइन्द छन्द ।।

श्री जिन अर्चा के हित पावन, निर्मल नीर के कुंभ भराएँ।
श्री जिनदेव महोदधि के पद, क्षीर महोदघि नीर चढ़ाएँ।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।1।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

श्री जिन चरणाम्बुज सुगंध से, पाप कुगंध नहीं रह पाए।
गंध चढ़ा जिन के चरणों में, बन्धन कर्मों का कट जाए।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए ।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए ।।2।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के धारी, जिनराज करें भव सिन्धु किनारा।
अक्षय रत्न चढ़ा हम भी भर, लें वह सम्यक् रत्न पिटारा।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।3।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

हे कमलाशन देव! चरण तव, कमलादिक हम पुष्प चढ़ाएँ।
नाथ! सदा हो हाथ मेरे सिर, नहीं सताएँ काम बलाएँ।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।4।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

रोग कुयोग वियोग हरे नित, केवलज्ञान के नैवज सारे।
छप्पन भोग से अर्च रहे हम, शीघ्र बनें शिव योग हमारे।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाये, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।5।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

केवलज्ञान महान कहा जो, आतम ज्ञान प्रकाश कराए।
रत्नमयी शुभ दीप जला जिन, अर्चा करने को हम लाए।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।6।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

तुम जग तारक हो भव हारक, हम बालक तव राज दुलारे।
धूप चढ़ा शिव भूप बनें हम, दो आशीष हे देव! हमारे।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।7।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

अक्षर मंत्र कला प्रतिभा मति, बुद्धि प्रदायक हे जिन स्वामी।
मोक्ष महाफल दो हमको फल, से यजते हे अन्तर्यामी!।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।8।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

हे जिनराज! मेरे महाराज, हो भव सिन्धू के आप सहारे।
अर्घ्य समर्पित हैं पद आज, बनो रक्षक प्रभु आप हमारे।।
मुक्तावलि व्रत है यह पावन, भवि जीवों को मुक्ति दिलाए।
वह भी मुक्ति श्री को पाए, जो जिन चरणों भक्ति जगाए।।9।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांति प्रदायक जिन चरण, देते शांतीधार।
भक्ती करना भक्त का, है पावन व्यवहार।।

शान्तये शांति धारा.....

दोहा - सुरभित पुष्पों से करें, पुष्पांजलि मनहार।
शिव पद हमको भी मिले, होय स्वप्न साकार।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा - रोग शोक सब दूर हों, मृत्यू नशे अकाल।
मुक्तावली व्रत की विशद, गाएँ हम जयमाल।।

।। शेरचाल-छन्द।।

जय-जय जिनेन्द्र वासुपूज्य, देव हमारे।
जय अष्ट कर्म मुक्त रहे, जग के सहारे।।
जय इन्द्र राज जिनके, पद शीश झुकावें।
आके सतेन्द्र चरणों, जयकार लगावें।। 1।।
प्रभु दोष अठारह से, विहीन कहे हैं।
जो मूलगुण छियालिस से, संयुक्त रहे हैं।।
प्रभु आत्म ध्यान करके, चउ कर्म नशाए।
केवल्य ज्ञान दर्शन, सुख वीर्य जगाए।। 2।।
चम्पापुरी में सोम शर्मा, विप्र कहाया।
पुत्री को जिसकी योवन के, मद ने सताया।।
मुनिवर को देख जिसके, मन ग्लानि बहु आई।
खोटे वचन के कारण, जो कर्म उपाई।। 3।।
कर्मो के फल से जाके, जो नरकों में गई।
आयु को पूर्ण करके, दुर्गन्धा जो भई।।
तिरस्कार जिसका भारी, लोगों ने तब किया।
जूंठन को खाके जिसने, जीवन स्वयं जिया।।4।।
मुनिराज का सुदर्श, उसके लिए मिला।
करके गुरु का दर्शन, मन उसका तब खिला।।
आता सभी को धर्म याद, कष्ट जब पढ़ें।
होके स्वयं लाचार धर्म, मार्ग पे बढ़ें।। 5।।
मैटो गुरु जी कष्ट सही, राह दिखाओ।
संसार पार मेरी, गुरु नाव लगाओ।।
मुक्तावली का व्रत तब, गुरुदेव ने दिया।
होके प्रसन्न विधि से व्रत, पूर्ण वह किया।। 6।।
कर स्त्रीलिंग छेदन, वह स्वर्ग में गई।
सौधर्म स्वर्ग में जा, देवेन्द्र जो भई।।

आयु को पूर्ण करके शुभ, जन्म फिर लिया।
मथुरा में राज्य श्रीधर, राजा ने तब किया।। 7।।
ब्राह्मण के घर में पद्मरथ नाम को पाया।
क्रीड़ा के हेतु वन में, वह एक दिन आया।।
दर्शन मुनी के उसने, तब वन में जा किए।
उपदेश पद्मरथ को, मुनिराज तव दिए।। 8।।
आतम का ध्यान करके, फिर ध्यान जगाए।
प्रभु का समवशरण तब, आ इन्द्र बनाए।।
सुनकर के विप्र प्रभु के, दर्शन को चल दिया।
वन्दन प्रभू के चरणों, जो भाव से किया।। 9।।
सुनकर प्रभू की वाणी, वैराग्य जगाया।
संयम को धारकर के, गणधर सुपद पाया।।
फिर ज्ञान 'विशद' पाके, सब कर्म नशाए।
बन सिद्ध प्रभु जाके, शिवधाम बनाए।। 10।।

दोहा - मुक्तावली व्रत की रही, महिमा अपरम्पार।
भव्य जीव व्रत धारकर, पावें भव से पार।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा - भक्त चरण में कर रहे, वन्दन द्वय कर जोर।
यही भावना है विशद, बढ़े मोक्ष की ओर।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली – प्रथम कोष्ठ

दोहा - प्रथम कोष्ठ के हम यहाँ, चढ़ा रहे हैं अर्घ्य।
भाते हैं यह भावना, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

।। अथ प्रथम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

क्षायक नवलब्धि के अर्घ्य

।। चाल-छन्द।।

जो ज्ञानावरणी नाशे, वे केवल ज्ञान प्रकाशे।
शुभ क्षयक ज्ञान जगावें, इस जग में पूजे जावें।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्शनावरण विनाशे, वे केवल दर्श प्रकाशे।
शुभ क्षायक ज्ञान जगावें, इस जग में पूजे जावें।।2।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दर्श मोहनीय नाशी, वे हो सम्यक्त्व प्रकाशी।
वे सम्यक क्षायक पावें, इस जग में पूजे जावें।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायक सम्यक्त्व प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चारित मोह विनाशे, वे सच्चरित प्रकाशे।
शुभ क्षायक चारित पावें, इस जग में पूजे जावें।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायक चारित्र प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भोगान्तराय विनाशी, निज आतम ज्ञान प्रकाशी।
वे क्षायक भाव जगाते, इस जग में पूजे जाते।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायक भोग प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग अन्तराय नाशी, होते सद् ज्ञान प्रकाशी।
उपभोग सुक्षायक धारी, जिनपद में ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायक उपभोग प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो दानान्तराय विनाशे, गुण निज के स्वयं प्रकाशे।
शुभ सम्यक् दान के धारी, जिन पद में ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायक दान प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों लाभान्तराय विनाशी, वे सद् संयम की राशी।
शुभ क्षायक लाभ के धारी, जिनपद में ढोक हमारी।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायक लाभ प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों वीर्यान्तराय निवारी, स्नातक जिन अनगारी।
शुभ क्षायक वीर्य के धारी, जिन पद में ढोक हमारी।।9।।

ॐ ह्रीं क्षायक वीर्य प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो घाती कर्म विनाशे, वे केवलज्ञान प्रकाशे।
नव क्षायक लब्धी धारी, जिन पद में ढोक हमारी।।10।।

ॐ ह्रीं क्षायक नवलब्धि प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितिय कोष्ठ

दोहा – नवग्रह हारी लोक में, होते हैं भगवान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। अथ द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

नवग्रह के अर्घ्य

।। जोगीरासा छन्द ।।

रवि ग्रह श्रेष्ठ प्रतापी जानो, यश कीर्ति उपजावे।
राशी मध्य बली जब होवे, कीर्ति पूर्ण नशावे।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।1।।

ॐ ह्रीं रविगृहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चन्द्र समान सुउज्ज्वल कीर्ति, चन्द्र सुग्रह फैलाए।
राशी में वक्री बनकर के, उल्टा असर दिखाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रगृह निवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मंगल ग्रह मंगलमय जानो, जग में मंगलकारी।
वक्री जब हो जाए राशि में, बने अमंगलकारी।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।3।।

ॐ ह्रीं मंगलग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ स्थान प्राप्त कर बुद्ध ग्रह, बुद्धीमान बनाए।
ज्योतिष लेखक वाद कुशलता, शब्द कुशलता पाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।4।।

ॐ ह्रीं बुद्धग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु ग्रह महिमाशाली गाया, गुरुत्तम पद दिलवाए।
सच्चारित्र वान सद्धर्मी, शुभ स्थान दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।5।।

ॐ ह्रीं गुरुगृहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काव्य कवि ऐश्वर्य सरलता, वात्सल्य गुण पाए।
शुक्र रहे राशी में चक्री, तो अपयश फैलाए।।

जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मृत्यू संकट सेवक तस्कर, क्रूर प्रवृत्ति कराए।
शुभ स्थान मिले राशी में, बहु यश तब फैलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

राहू ग्रह कटु वक्ता रोगी, दुष्ट प्रवत्ति कराए।
नर को विधु नारी को विधवा, जैसे दुःख दिलाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।8।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केतू ग्रह वक्री बनकर के, अतिशय दुखी बनाए।
तंत्र मंत्र जादू टोना कृत, दर्द घाव दिलवाए।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।9।।

ॐ ह्रीं केतुग्रहनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर के गुण की महिमा, आज यहाँ हम गाते।
नवग्रह की पीड़ा से बचने, प्रभु! चरणों सिर नाते।।
जिन भक्तों का साथ निभाता, जो सौभाग्य जगाए।
रवि समान कीर्ति मानव की, चहुँ दिश में फैलाए।।10।।

ॐ ह्रीं नवग्रहरिष्टनिवारक मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

तृतिय कोष्ठ

दोहा – पूज्य रहे नवदेवता, तीनों लोक प्रधान।
जिनकी अर्चा कर मिले, शिवपद का सोपान।।

।। अथ तृतीय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

नवदेवता

कर्म घातिया नाश किए जिन, दोष अठारह रहित महान।
करुणाकर हैं जगत हितैषी, मंगलमय अर्हत् भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत् पद प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाशकर, उत्तम पद पाए निर्वाण।
अविनाशी अक्षय अखण्ड पद, पाए श्री सिद्ध भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं सिद्ध पद प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचाचार समीति गुप्ति, आवश्यक तप तपें महान।
जैनाचार्य धर्म के धारी, त्रिभुवन गुरू कहे गुणवान।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्य पद प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, ज्ञाता जग में रहे प्रधान।
स्व-पर के उपकार हेतु जो, देते सबको सम्यक् ज्ञान।।4।।

ॐ ह्रीं उपाध्याय पद प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, रत्नत्रय धारी गुणगान।
परम दिगम्बर निर्भय साधू, जैन धर्म की अनुपम शान।।5।।

ॐ ह्रीं साधु पद प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

परम अहिंसामयी धर्म की, महिमा जो भी गाते हैं।
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त कर, मोक्ष महल को जाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं जिनधर्मेभ्यो प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

ॐकारमय जिनवाणी को, अपने हृदय सजाते हैं।
विशद ज्ञान के धारी बनकर, केवलज्ञान जगाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं जिनागमेभ्यो प्राप्त मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों की, अर्चा करते बारम्बार।
अल्पकाल में भव्य जीव, शिवपद पाते अपरम्पार।।8।।

ॐ ह्रीं जिनचैत्येभ्यो प्राप्त व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, तीन लोक में रहे महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, गाते हैं प्रभु का गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्यो व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा - अर्हदादि नवदेवता, जग में रहे महान।
जिनकी अर्चा 'विशद', जीव बनें श्रीमान।।

ॐ ह्रीं नवदेव प्राप्त व्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा - नव पदार्थ में धारते, प्राणी सद् श्रद्धान।
भव्य जीव वे शीघ्र ही, पावें पद निर्वाण।।

।। अथ चतुर्थ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

नव पदार्थ

जो दर्श ज्ञान शुभ पाए, चेतन मय जीव कहाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।1।।

ॐ ह्रीं जीव पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो चेतन गुण ना पाए, वह द्रव्य अजीव कहाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।2।।

ॐ ह्रीं अजीव पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का आना भाई, आश्रव गाए दुखदायी।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।3।।

ॐ ह्रीं आस्रव पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो कर्म जीव मिल जाए, वह बन्ध तत्व कहलाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।4।।

ॐ ह्रीं बन्ध पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो कर्माश्रव रुक जाए, संवर आगम में गाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।5।।

ॐ ह्रीं संवर पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो कर्म निर्जरा भाई, क्षय एक देश मय भाई।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।6।।

ॐ ह्रीं निर्जरा पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो कर्म पूर्ण क्षय जाए, वह तत्त्व मोक्ष कहलाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।7।।

ॐ ह्रीं मोक्ष पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ भाव जीव जो पाए, वह पुण्य पदार्थ कहाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।8।।

ॐ ह्रीं पुण्य पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अशुभ भाव को पाए, वह पाप पदार्थ कहाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।9।।

ॐ ह्रीं पाप पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह नव पदार्थ कहलाए, जो जिन वाणी में गाए।
जिनवर पदार्थ बतलाए, जो शिव के कारण गाए।।10।।

ॐ ह्रीं नव पदार्थ प्रकाशक श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

दोहा – नो कषाय से जीव के, होवें सुगुण विनाश।
जिन अर्चा करके विशद, पूरी होवे आस।।

।। अथ पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

नव नो कषाय रहित

(चाल छन्द)

कर्म हास्य कहलाए, कर्मों का बन्ध कराए।
प्रभु 'हास्य' कर्म के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।1।।

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो भोगों में रति पाए, वह सारा जगत भ्रमाए।
प्रभु 'रति' कर्म के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।2।।

ॐ ह्रीं रति नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति कर्म दुखदायी, भव का कारण है भाई।
प्रभु 'अरित' कर्म के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।3।।

ॐ ह्रीं अरित नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो इष्ट वस्तु खो जाए, तो मन में शोक मनाए।
प्रभु 'शोक' कर्म के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।4।।

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय से होवे भयसकारी, है यह भी कर्म दुखारी।
प्रभु 'भय' कर्म के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।5।।

ॐ ह्रीं भय नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्लानी मन में जो आए, वह कर्म जुगुप्सा कहाए।
प्रभु रहे 'जुगुप्सा' नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी।।6।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नर से रति जिसको आए, वह स्त्री वेद कहाए।
प्रभु 'स्त्री वेद' के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी ।।7 ।।

ॐ ह्रीं स्त्री वेद नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारी से रति को पाए, वह पुरूष वेद कहाए।
प्रभु 'पुरुषवेद' के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी ।।8 ।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नर नारी से रति पाए, तो वेद नपुंसक पाए।
प्रभु 'नपुंसक वेद' के नाशी, हैं केवल ज्ञान प्रकाशी ।।9 ।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नो हैं हास्यादि कषाएँ, जिनके नामे रह पाएँ।
प्रभु नव कषाय के नाशी, है केवल ज्ञान प्रकाशी ।।10 ।।

ॐ ह्रीं नव नो कषाय विरहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षष्टम कोष्ठ

दोहा – कर्मास्रव के हेतु हैं, जीवों के नो कर्म।
फिर भी तन से हो प्रगट, जीवों का निज धर्म ।।

।। अथ षष्ठम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

कर्म नो कर्म

।। मोतियादाम छन्द ।।

नशाए ज्ञानावरणी कर्म, नाशकर प्रगटाए निज धर्म।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान ।।1 ।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणीकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शनावरणी कर्म विशेष, किए जो प्रभु जी नाश अशेष।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान ।।2 ।।

ॐ ह्रीं दर्शनारणीकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वेदनीय करके कर्म विनाश, किए गुण अव्यावाध प्रकाश।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान ।।3 ।।

ॐ ह्रीं वेदनीयकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहनीय का करके प्रभु अन्त, जगाए हैं प्रभु सौख्य अनन्त।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान ।।4 ।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म आयू का करके नाश, सुगुण अवगाहन में कर वास।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं आयुकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म नाशे प्रभु अपना नाम, करे जग जिनके चरण प्रणाम।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गोत्र प्रभु करके कर्म विनाश, अगुरूलघु गुण प्रभु किए विकाश।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म प्रभु अन्तराय का अंत, करें फिर हो जाते अरहंत।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करें हम जिन का भी गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाश कर रागादिक निज भाव, प्रभू प्रगटाते निज स्वभाव।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करे हम जिन का भी गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं भावकर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नाशकर द्रव्यभाव मयकर्म, प्रकट कीन्हे निज आतम धर्म।
जिनेश्वर पाए केवल ज्ञान, करे हम जिन का भी गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं द्रव्यभाव कर्म रहिताभ्यां श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्तम कोष्ठ

दोहा – हैं प्रमाण के हेतु जो, नौ नय कहे जिनेश।
आगम का जिससे विशद, होवे कथन विशेष।।

।। अथ सप्तम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

नव नयप्ररूपक

द्रव्यापेक्षा कथन रहा जो, वह 'द्रव्यार्थिक नय' है भ्रात।
सत्यादिक षट् गुण हैं जिसमें, सदा विचरते होवे ज्ञात।।1।।

ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर्यायापेक्षा कथन वस्तु का, 'पर्यायार्थिक नय' कहलाय।
गुण विकार पर्याय कहाय, क्षण ध्वंशी नित होती जाय।।2।।

ॐ ह्रीं पर्यायार्थिकनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ग्रहण करे संकल्प मात्र जो, वह 'नैगम नय' कहे जिनेश।
अनिश्पन्न को भी निश्पन्न वत्, वस्तु ग्रहण जो करे विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं नैगमनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निज जाति के रोध रहित जो, एक पने से जो करे ग्रहण।
वह 'संग्रहनय' कहा लोक में, सद् वस्तु का करे कथन।।4।।

ॐ ह्रीं संग्रहनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो संग्रहीत संग्रह नय द्वारा, वस्तु का विधि पूर्वक भेद।
करता है 'व्यवहार कहा नय', जिसके रहे अनेक प्रभेद।।5।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सरल अर्थ को सूत्रित करता, 'ऋजू सूत्र नय' कहा विशेष।
वर्तमान वस्तू का ग्राही, बतलाए यह श्री जिनेश।।6।।

ॐ ह्रीं ऋजू सूत्रनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लिंग संज्ञा संख्या आदिक के, जो व्यभिचार को करता दूर।
कहा 'शब्दनय' जैनागम में, है अनेक लक्षण भरपूर।।7।।

ॐ ह्रीं शब्दनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अभिरूढ अर्थ का ग्राही, 'समभिरूढ नय' जिसका नाम।
गौ पशु आदिक वस्तु ग्राही, बतलाना है जिसका काम।।8।।

ॐ ह्रीं समभिरूढ नय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वर्तमान की क्रिया ग्रहण कर, कथन करे जो नय उस रूप।
'एवंभूत नय' कहा है जग में, इसके आगे सब मजबूर।।9।।

ॐ ह्रीं एवंभूतनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो वस्तु व्यवहार नयों से, नयों से होवे सम्यक् ज्ञान।
सार भूत आगम के नय हैं, नयों से जिन का हो गुणगान।।10।।

ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकादि नवनय निरूपकाय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्टम कोष्ठ

दोहा - त्रस स्थावर जीव के, रक्षक हैं जो लोग।
संयम के धारी विशद, पाएँ शिव का योग।।

।। अथ अष्टम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

नव विधि जीव रक्षक

चौपाई

अशुभ कर्म का बन्ध जो पावें, एकेन्द्रिय जीवों में जावें।
सूक्ष्म स्थूल भेद दो गाए, पृथ्वीकायिक जीव कहाए।।1।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध करते हैं प्राणी, एकेन्द्रिय पाते अज्ञानी।
बादर सूक्ष्म भेद दो गाए, जलकायिक प्राणी कहलाए।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायिक परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकायक जीव जो गाए, दुःख अनेकों प्राणी पाए।
जलते स्वयं जलाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।।3।।

ॐ ह्रीं अग्नि परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवनकाय की महिमा न्यारी, होती है जग में मनहारी।
एकेन्द्रिय यह जीव बताए, दुःख अनेकों जिनने पाए।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकायिक परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरितकाय प्राणी कहलावें, छेदन-भेदन के दुख पावें।
शीतादिक की बाधा सहते, फिर भी मगन स्वयं में रहते।।5।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखादिक दो इन्द्रिय गाये, योनी जिन दो लाख बताए।
सम्मूर्च्छन यह प्राणी जानो, त्रस कहलाएँ ऐसा मानो।।6।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय जीव परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थु आदिक जीव रहे हैं, त्रय इन्द्रिय जिनराज कहे हैं।
सम्मूर्च्छन यह प्राणी जानो, त्रस कहलाएँ ऐसा मानो।।7।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीव परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमरादिक चउ इन्द्रिय जानो, त्रस सम्मूर्च्छन यह भी मानो।
योनी जिन दो लाख गिनाए, भाँति भाँति के जो बतलाए।।8।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीव परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु नरकों के गाए, पंचेन्द्रिय सब जीव बताए।
सम्मूर्छन गर्भज ये प्राणी, भ्रमण करें जग में अज्ञानी।।9।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय जीव परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस स्थावर जीव कहाएँ, भव-भव में जो दुःख उठाएँ।
श्री जिनेन्द्र की महिमा गाएँ, भव दुख से छुटकारा पाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं त्रस स्थावर परिरक्षणरूपोत्तम मुक्तावलीव्रताराध्य श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवम कोष्ठ

दोहा – नौ विशेष लक्षण कहे, जीवों के जिनराज।
व्याख्या जिनकी अब यहाँ, करते है हम आज।।

।। अथ नवम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जीव लक्षण प्ररूपक

चौपाई

'जीव' रहा चेतनमय भाई, जिसकी है जग में प्रभुताई।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।1।।

ॐ ह्रीं जीवलक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'उपयोग मयी' कहलाए, शाश्वत गुण यह स्वयं जगाए।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।2।।

ॐ ह्रीं उपयोगलक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहा 'अमूर्तिक गुण' का धारी, जीव विशद होता अविकारी।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।3।।

ॐ ह्रीं अमूर्तिकलक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है व्यवहार से 'कर्त्ता' प्राणी, ऐसा कहती है जिनवाणी।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।4।।

ॐ ह्रीं कर्त्तालक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'भोक्ता' यह प्राणी कहलाए, कर्म शुभाशुभ का फल पाए।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।5।।

ॐ ह्रीं भोक्तालक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव 'स्वदेह बराबर' जानो, हीनाधिक ना होवे मानो।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।6।।

ॐ ह्रीं स्वदेहप्रमाण लक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जीव अनादी हैं 'संसारी', कहलाए जो पंचप्रकारी।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।7।।

ॐ ह्रीं संसारीलक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'सिद्ध शुद्ध' यह जीव कहाए, निश्चय नय से आगम गाए।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।8।।

ॐ ह्रीं सिद्धशुद्धलक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ऊर्ध्व गमन स्वाभावी' जानो, काल अनादी गुण यह मानो।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।9।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वगमन लक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गुण विशिष्ट जिनवर यह गाए, विशद शक्ति प्रगटाने आए।
जो भी अपने कर्म नशाए, सारे जग में पूजा जाए।।10।।

ॐ ह्रीं विशेष लक्षणप्ररूपक मुक्तावलीव्रताराध्य श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

।। पुष्पांजलिं क्षिपामि ।।

जयमाला

दोहा - मुक्तावली व्रत कर विशद, कटें कर्म जंजाल।
अतः भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

।। चौपाई ।।

मुक्तावलि व्रत मुक्त कराए, कर्मों से मुक्ती दिलवाए।
काल अनादी जगत भ्रमाए, पंच परावर्तन भी पाए।।
जन्म मरण अष्टादश गाए, एक श्वाँस में हमने पाए।
हो निगोदिया दुःख उठाए, काल अनन्त कहा ना जाए।।1।।

भू कायिक बनके दुख पाए, जल कायिक हो जगत भ्रमाए।
अग्नी होकर जले जलाए, वायू कायिक हो दुख पाए।।
शीत उष्ण वर्षा की भारी, तरु पीड़ा सहते वनचारी।
विकलत्रय प्राणी जो गाए, वे प्राणी कई दुःख उठाए।।2।।
कभी कर्म से हुए असैनी, पुण्योदय से होते सैनी।
शक्ति हीन होके भयकारी, पशु गति में पाई बीमारी।।
सबल हुए कई प्राणी खाए, भार वहन के दुःख उठाए।
नरकों में दुख हम जो पाए, उनका कहीं ना अन्त दिखाए।।3।।
मानव गति की कथा निराली, मन को मोहित करने वाली।
धन परिजन से कोई दुखारी, तन में किसी के हो बीमारी।।
कोई होते वैभव धारी, कोई होवें भिक्षाकारी।
रही किसी को कुछ लाचारी, रहे स्वजन के कोई दुखारी।।4।।
देवों के दुख हम जो पाए, वे सब कहने में ना आए।
जब तक जीव रहे संसारी, तब तक दुख उठाए भारी।।
अतः बनो रत्नत्रय धारी, होके तन मन से अविकारी।
अपने सारे कर्म नशाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवी को पाएँ।।5।।

दोहा - व्रत संयम हैं जीव को, शिव पद का सोपान।
अतः भाव से व्रत करें, सभी जीव गुणवान।।

ॐ ह्रीं मुक्तावली व्रताराध्य श्री वासुपज्य जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - व्रत की है महिमा विशद, जग में अपरम्पार।
भाव सहित व्रत धार कर, पाना भव से पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

मुक्तावली व्रत की आरती

(तर्ज - हो जिनवर, हम सब....)

मुक्तावली व्रत की करते हम, आरती मंगलकारी।
व्रताराध्य श्री वासुपूज्य हैं, जग के संकटहारी।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती-2।। टेक।।
चम्पापुर में गर्भ-जन्म-तप, ज्ञान-मोक्ष पद पाए।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर तब, समवशरण बनवाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 1।।
विप्र सोम शर्मा की पुत्री, यौवन में जब आई।
मुनि को देख ग्लानी करके, अशुभ कर्म को पाई।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 2।।
नरकादि गति से आकर, दुर्गन्धा कहलाई।
जगह-जगह पर लोगों द्वारा, तिरस्कार जो पाई।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 3।।
गुरूपदेश पा मुक्तावलि व्रत, करके पुण्य बढ़ाया।
प्रथम स्वर्ग में गई पुण्य से, पद देवेन्द्र का पाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 4।।
वहाँ से चयकर मथुरा नगरी, में जो जा उपजाई।
दीक्षा धारण करके भाई, गणधर का पद पाई।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 5।।
मुक्तावलि व्रत करके प्राणी, मुक्ति वधू को पाएँ।
'विशद' भाव से श्री जिनपद में, पूजा आरति गाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरती।। 6।।

विशद
सुख चिन्तामणि विधान पूजा

"माण्डला"

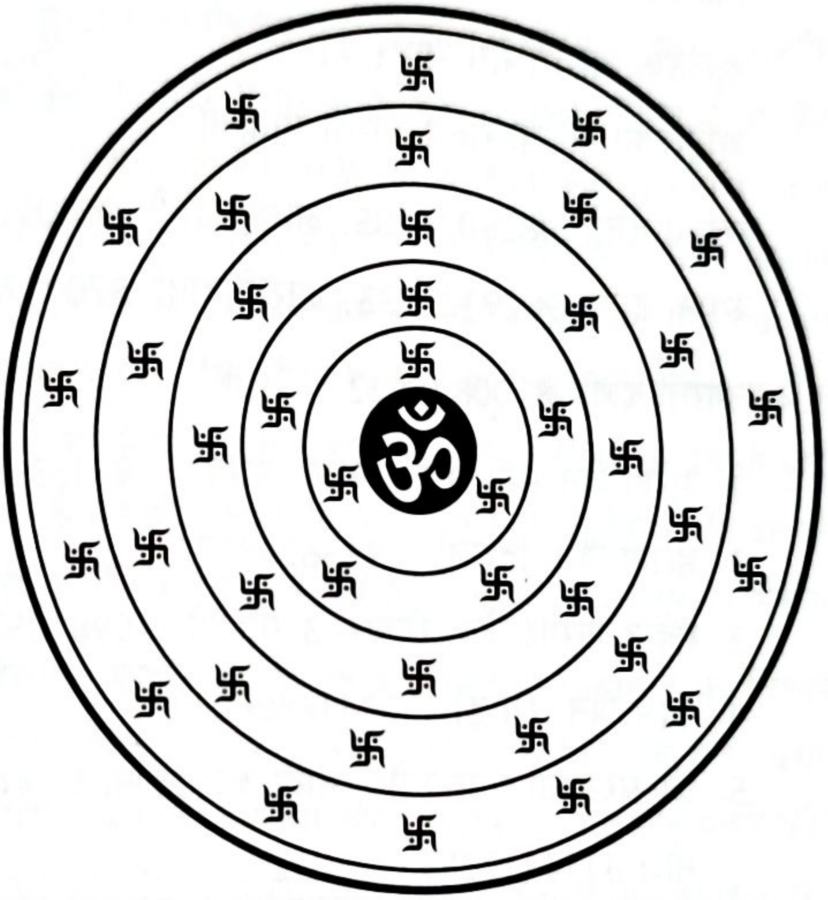

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

सुख चिन्तामणि व्रत का स्वरूप

दोहा – सुख चिंतामणि व्रत करें, चिन्तित फल दातार।
विशद शांति सुख प्राप्त कर, पाए भवदधि पार।।

उच्यते, सुखचिन्तामणौ चतुर्दशी चतुर्दशकं, एकादश्येकादशकं, अष्टम्यष्टकं, पंचमी पंचकं, तृतीया त्रिकमेवमुपवासाः एकचत्वारिंशत्। न कृष्णपक्षशुक्लपक्षगतो नियमः, केवलां तिथिं नियम्य भवन्तीति उपवासाः। अस्य व्रतस्य पंचभावनाः भवन्ति, प्रत्येकभावनयामभिषेको भवति।

अर्थ – सुखचिन्तामणि व्रत में चतुर्दशियों में चौदह उपवास, एकादशियों के ग्यारह उपवास अष्टमियों के आठ, पंचमियों के पाँच उपवास, तृतियाओं के तीन उपवास इस प्रकार कुल 41 उपवास होते हैं। इस व्रत में कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष का कुछ भी नियम नहीं है, केवल तिथि का नियम है। उपवास के दिन व्रत की विधेय तिथि का होना आवश्यक है। इस व्रत की पाँच भावना होती है, प्रत्येक भावना में एक अभिषेक किया जाता है। अभिप्राय यह है कि चौदह चतुर्दशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, ग्यारह एकादशियों के व्रत के पश्चात् एक भावना, आठ अष्टमियों के व्रत के बाद एक भावना, पाँच पंचमियों के व्रत के पश्चात् एक भावना एवं तीन तृतीयाओं के व्रत के पश्चात् एक भावना करनी होती है। प्रत्येक भावना के दिन भगवान का अभिषेक करना होता है।

विवेचन – सुखचिंतामणि व्रत के लिए केवल तिथियों का विधान है। यह व्रत तृतीया, पंचमी, अष्टमी, एकादशी और चतुर्दशी को किया जाता है। प्रथम इस व्रत का प्रारम्भ चतुर्दशी से करते है, लगातार चौदह चतुर्दशी अर्थात सात महिने की चतुर्दशियों में चतुर्दशीव्रत पूरा होता है। साथ ही चतुर्दशीव्रत के तीन उपवास हो जाने पर एकादशी व्रत प्रारम्भ होता है। जिस एकादशी से व्रत आरम्भ किया जाता है, उस दिन भगवान का अभिषेक करते है तथा व्रत की भावना भाते हैं। तीन चतुर्दशियों के व्रत के उपरांत एकादशी और चतुर्दशी दोनों व्रत अपनी-अपनी तिथि में साथ-साथ किये जाते हैं।

तीन एकादशी व्रत हो जाने के पश्चात् अष्टमी व्रत प्रारम्भ किया जाता है। जिस दिन अष्टमी व्रत प्रारंभ करते हैं, उस दिन भगवान का अभिषेक समारोहपूर्वक करते हैं। यह सदा स्मरण रखना होगा कि प्रत्येक व्रत के प्रारम्भ में अभिषेक 108 कलशों से किया जाता है। तीन अष्टमी व्रत हो जाने के उपरांत पंचमी व्रत प्रारम्भ करते हैं, इसके प्रारम्भ

करने की विधि पूर्ववत् ही है। चतुर्दशी, एकादशी, अष्टमी और पंचमी ये व्रत एक साथ चलते हैं। दो पंचमी व्रतों के हो जाने पर तृतीया व्रत आरम्भ होता हैं, इस दिन भी वृहद् अभिषेक, पूजन-पाठ आदि धार्मिक कृत्य किये जाते हैं। ये सभी व्रत तीन पक्ष तक अर्थात तीन तृतीयाँ व्रतों के सम्पूर्ण होने तक साथ-साथ चलते हैं। तृतीया के दिन ही इन व्रतों की समाप्ति होती है। इस दिन वृहद् अभिषेक समारोहपूर्वक करना चाहिए। उपवास के दिनों में - "**ॐ ह्रीं सर्वदुरितविनाशनाय श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नमः।**" इस मंत्र का जाप प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल करना चाहिए। सुखचिंतामणि व्रत निश्चित तिथि में ही सम्पन्न किया जाता है। यदि व्रत की तिथि आगे-पीछे के दिनों में होती है तो व्रत आगे-पीछे किया जाता है। यह व्रत चिंतामणिरत्न के समान सभी प्रकार के सुखों को देने वाला है। भावना के दिन चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ की पूजा विशेष रूप से की जाती है तथा "**ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्री पार्श्वनाथाय नमः**" इस मंत्र का जाप किया जाता है।

इस व्रत में 14 चतुर्दशी, 11 एकादशी, 8 अष्टमी, 5 पंचमी एवं 3 तृतीया ऐसे 41 व्रत करने होते हैं। यहाँ पर कार्तिक से व्रत प्रारम्भ करने पर क्रम से चार्ट दिया जा रहा है। यदि अन्य किसी माह से प्रारम्भ करें तो उस माह से चार्ट बना लेवें।

विधि – कार्तिक से वैशाख तक करना है।

1. **कार्तिक कृष्णा 14**
2. **कार्तिक शुक्ला 14**
3. **मगसिर कृष्णा 14**
4. **मगसिर शुक्ला 11, 14**
5. **पौष कृष्णा 11, 14**
6. **पौष शुक्ला 11, 14**
7. **माघ कृष्णा 8, 11, 14**
8. **माघ शुक्ला 8, 11, 14**
9. **फाल्गुन कृष्णा 8, 11, 14**
10. **फाल्गुन शुक्ला 5, 8, 11, 14**
11. **चैत्र कृष्णा 5, 8, 11, 14**
12. **चैत्र शुक्ला 3, 5, 8, 11, 14**
13. **वैशाख कृष्णा 3, 5, 8, 11, 14**
14. **वैशाख शुक्ला 3, 5, 8, 11, 14**

इस व्रत को किसी भी माह से शुरू कर सकते हैं।

स्तवन

दोहा - व्रत की महिमा है अगम, कोई न पावें पार।
व्रत के धारी जीव सब, पावें भवदधि पार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

अनेकांत और स्याद्वाद के, सूत्रधार जो रहे महान।
राग द्वेष आदिक विभाव के, क्षय कर्त्ता गाये भगवान।।
पंच कल्याण महोत्सव पाए, बने आप प्रभु जी महावीर।
शरण आपकी पाने वालों, की मिट जाए भव की पीर।।1।।
उद्यापन सुखचिंतामणि व्रत, करने वाले जीव प्रधान।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, दुख से मुक्ती पायें महान।।
है सुख चिंतामणि विशद शुभ, जैनागम में सार्थक नाम।
देव शास्त्र गुरु के चरणों में, करके भाई विशद प्रणाम।।2।।
सकली करण क्रिया करके शुभ, क्षेत्रपाल का कर आह्वान।
रक्षक देवी देव रहे जो, उनको करके भेंट प्रदान।।
जिनवर का अभिषेक सुविधिकर, करके जिनवर का अर्चन।
पंच वलय रचनाकर, करके जिनपद में वन्दन।।3।।
देव शास्त्र गुरू की अर्चा कर, पावन रहे पंच कल्याण।
अष्ट गुणों के धारे जिनवर,सर्व परिग्रह रहित महान।।
तेरह विध चारित्र धारते, तप धारी साधु गुणवान।
स्वपर के उपकारी पावन, करे जगत जन का कल्याण।।4।।
करें अर्चना विशद भाव से, पूर्ण होय यह श्रेष्ठ विधान।
व्रत का पालन करने वाले, फल पाते हैं महति महान।
पुण्योदय आये जीवन में, जीव करें निज का कल्याण।।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, सुख चिंतामणि सुव्रत महान।।5।।

दोहा - सुख चिंतामणि व्रत रहा, मंगलमयी महान।
सुखशांती सौभाग्य हो, व्रत जो करें विधान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

सुख चिन्तामणि विधान पूजा

स्थापना

सर्व दुरित के रहे विनाशक,तीर्थंकर चौबिस भगवान।
जिनकी अर्चा करने वाले ,पा लेते हैं पुण्य निधान।।
सुख चिंता मणिव्रत है पावन,भाव सहित जो करें विधान।
तिथियों के अनुसार सुव्रत कर,अनुक्रम से पावें निर्वाण।।

दोहा - अर्चा जिन तीर्थेश की,करते यहाँ महान।
विशद हृदय में भाव से,करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आहवानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

तर्ज-सोलहकारण पूजन.....

श्रद्धा से जल चरण चढ़ाय, त्रय धारा देकर हर्षाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जलं निर्व. स्वाहा।

संसारिक सुख प्राणी पाय, जीवों को शिव सुख दिलवाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय चन्दन निर्व. स्वाहा।

अक्षत श्री जिन चरण चढ़ाय, वह अक्षय पदवी को पाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अक्षतं निर्व. स्वाहा।

विषय वासना है दुखदाय, काम नशाने पुष्प चढ़ाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

जग के सारे भोजन खाय, फिर भी तृप्त नहीं हो पाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाय, मिथ्या तम को पूर्ण नशाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुद्ध धूप जिन चरण चढ़ाय, अष्ट कर्म को पूर्ण नशाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय धूपं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे फल मुक्ति प्रदाय, कर्म फलों की शक्ति नशाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय फलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय की नौका पाय, पद अनर्घ्य प्राणी प्रगटाय।
श्री जिन धाम, जिनवर के पद विशद प्रणाम।।
जिनवर की पूजा सुखकार, देने वाली सौख्य अपार।
श्री जिन धाम, जिनवर के पर विशद प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - दर्पण सम प्रभु ज्ञान में, झलके लोकालोक।
शांती धारा दे रहे, मिटे रोग या शोक।।

शान्तये शांति धारा.....

दोहा - गुणानन्त पर्याय को, जानें श्री भगवान।
पुष्पांजलि करते, चरण पाने शिव सोपान।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा – सुख चिंतामणि व्रत किए, सुख पावें जग जीव।
जयमाला गावें विशद, पावें पुण्य अतीव।।

चौपाई

सुख चिंतामणि व्रत मनहारी, पावन है जो अतिशयकारी।
भव्य जीव जो श्रद्धा धारी, जिन भक्ती करते मनहारी।।1।।
मन में व्रत का भाव जगाते, देव शास्त्र गुरु के पद पाते।
श्री फल उनके चरण चढ़ाते, शुभाशीश गुरुवर से पाते।।2।।
फिर संकल्प करें शुभ भाई, व्यसन त्याग करते दुखदायी।
होते अष्ट मूलगुण धारी, निज आवश्यक के कर्त्तारी।।3।।
चौदह चतुर्दशी के जानो, व्रत करते व्रत धारी मानो।
ग्यारह ग्यारस के व्रत भाई, पालें श्रावक अतिशय दायी।।4।।
आठ अष्टमी के व्रत गाए, शिवपद कारी जो बतलाए।
पाँच पंचमी के व्रत धारें, अपने सारे नियम सम्हारें।।5।।
तृतीया के व्रत तीन बताए, पालन के शुभ भाव जगाए।
इक्तालिस व्रत इसके जानो, भाव सहित यह पालें मानो।।6।।
कार्तिक से व्रत करना गाए, अंत माह वैशाख बताए।
उत्तम विधि यह पावन गाई, अन्य सुविधि इच्छित बतलाई।।7।।
सर्व दुरित का नाशनकारी, पावन यह व्रत मंगल कारी।
तीर्थंकर चौबिस को ध्याए, जिनका शुभ अभिषेक कराए।।8।।
अष्ट द्रव्य से पूज रचाए, दीप जलाकर आरति गाए।
जाप करें शुभकर फलदायी, जिनकी फैले जग प्रभुताई।।9।।
इस प्रकार व्रत करें कराएँ, अपना निज सौभाग्य जगाएँ।
अनुक्रम से संयम को पाए, कर्म नाशकर शिवपुर जाए।।10।।
''विशद'' भावना हम ये भाएँ, हम भी रत्नत्रय निधि पाएँ।
अनुपम केवलज्ञान जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ।।11।।

दोहा – अर्चा करते आज हम, हे पावन जिनराज!।
भवदधि तट तक ले, चलो तारण तरण जहाज।।

ॐ ह्रीं श्री सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा – जिन अर्चा करके जगे, मेरा भी सत्भाग्य।
जीवन मंगल मय बने, जागे यह सौभाग्य।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा - देव शास्त्र गुरु लोक में, गाऐ अपरम्पार।
पुष्पांजलि करते यहाँ, नत हो बारम्बार।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

देव शास्त्र गुरु के अर्घ्य

चौबोला-छन्द

छियालिस मूलगुणों के धारी, होते हैं अर्हत् भगवान।
आठों कर्म विनाशी होते, अतिशय कारी सिद्ध महान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिन का गुणगान।
विशद भावना भाते हैं हम, शीघ्र प्राप्त हो पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत् गुण विभूषित अष्टादश दोष रहित श्री अरिहंत सिद्ध जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र की पावन वाणी, ॐकार मय महति महान।
भवि जीवों को ज्ञान प्रदायक, देने वाली शिव सोपान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिन का गुणगान।
विशद भावना भाते हैं हम, शीघ्र प्राप्त हो पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, पावन रत्नत्रय गुणवान।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, करने वाले जग कल्याण।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिन का गुणगान।
विशद भावना भाते हैं हम, शीघ्र प्राप्त हो पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आचार्य उपाध्याय साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव शास्त्र गुरु हैं उपकारी, जिनमें धारण कर श्रद्धान।
भव्य जीव अर्चा कर पाते, पावन मुक्ती का सोपान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिन का गुणगान।
विशद भावना भाते हैं हम, शीघ्र प्राप्त हो पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आप्तआगम सर्व साधुभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितिय वलयः

दोहा – तीर्थंकर पद प्राप्त जिन, पाएँ पंच कल्याण।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

तीर्थंकर प्रकृति जो पाएँ, सुर उनके कल्याण मनाएँ।
रत्नवृष्टि शुभ देव कराते, जिनवर जग में पूजे जाते।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जन्म कल्याणक जिनवर पाते, इन्द्र मेरु पे न्हवन कराते।
रत्नवृष्टि शुभ दे कराते, जिनवर जग में पूजे जाते।।2।।

ॐ ह्रीं जन्म कल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैरागी हों संयमधारी, होकर बनते हैं अनगारी।
निज आतम का ध्यान लगाते, जिनवर जग में पूजे जाते।।3।।

ॐ ह्रीं तप कल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाते, पावन केवल ज्ञान जगाते।
दिव्य देशना आप सुनाते, जिनवर जग में पूजे जाते।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोक्ष कल्याणक जिनवर पाते, कर्म नाश कर शिवपुर जाते।
सिद्ध शिलापर धाम बनाते, जिनवर जग में पूजे जाते।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शम्भू छन्द

गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष यह, पंचकल्याणक कहे महान।
भव्य जीव अर्चा करते शुभ, वे पाते हैं शिव सोपान।।
जिनकी अर्चा करने पावन, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
हम भी मोक्ष मार्ग अपनाये, यही भावना भाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं पंच कल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – दुखकारी हैं लोक में, जीवों को वसुकर्म।
नाश करें जो भी 'विशद', प्रगटाएँ निज धर्म।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अर्घ्य

चाल-छन्द

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर केवल ज्ञान प्रकाशे।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान गुण सहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु दर्शावरण विनाशें, फिर केवल दर्श प्रकाशें।।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन गुण सहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु वेदनीय के नाशी, सुख अव्यावाध प्रकाशी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अव्यावाधा गुण सहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु मोहनीय के नाशी, हैं सुख अनन्त के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण सहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु आयू कर्म विनाशें, गुण अवगाहनत्व प्रकाशें।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं नाम कर्म के नाशी, सूक्ष्मत्व सुगुण के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण युक्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु गोत्र कर्म विनशाएँ, अवगाहन गुण प्रगटाएँ।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुण युक्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय के नाशी, हैं बल अनन्त के वासी।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वीर्यानन्त गुण युक्त श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु अष्ट कर्म विनशाएँ, जो सुगुण अष्ट प्रगटाएँ।
हम जिन पद पूज रचाएँ, फिर शिव पदवी को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशकाय सम्यक्तवादि अष्ट गुण समन्विताय श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा - बाह्य परिग्रह दश तथा, अभ्यन्तर परित्याग।
ऋषिवर करते साधना, धार आतम अनुराग।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

परिग्रह रहित जिनके अर्घ्य

चौपाई

खेतादिक जो भूमि कहाए, क्षेत्र परिग्रह वह कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।1।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गृह मकान आदिक जो पाए, वस्तु परिग्रह यह कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।2।।

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रजत पात्र आभूषण गाए, हिरण्य परिग्रह यह कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।3।।

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सिक्के स्वर्ण पात्र जो पाए, स्वर्ण परिग्रह यह कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।4।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गाय भैंस पशु धन जो गाए, परिग्रह धन यह शास्त्र बताए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।5।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गेहू जौ मक्कादिक भाई, धान्य परिग्रह है दुखदायी।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।6।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सेवा को नौकर जो पाए, दास परिग्रह यह कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।7।।

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काम करे घर में जो दायी, दासि परिग्रह है ये भाई।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।8।।

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कपड़े आदिक जो भी पाए, कुप्य परिग्रह ये कहलाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।9।।

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बर्तन भाड़े जो भी गाए, भाण्ड परिग्रह प्राणी पाए।
होते हैं जो इसके त्यागी, शिव पद पाते वे बड़भागी।।10।।

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभ्यंतर परिग्रह भी भाई, चौदह बतलाए दुखदाई।
अनका त्याग करें हे ज्ञानी !, ऐसा कहती है जिनवाणी।।11।।

ॐ ह्रीं अभ्यंतर परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बाह्य परिग्रह दस बतलाए, चौदह अभ्यांतर के गाए।
परिग्रह रहित श्री जिनस्वामी, होते 'विशद' मोक्षपथ गामी।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व परिग्रह रहित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा - तेरह विधि चारित्र धार, करें समाधी अन्त।
विशद साधना कर बनें, भव्य जीव अर्हन्त।।

।। पंचम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

तेरह विधि चारित्र एवं साधू समाधि

चौपाई

परम ''अहिंसा व्रत'' के धारी, साधू होते हैं अनगारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''सत्य महाव्रत'' धारी गाए, पावन मोक्ष मार्ग अपनाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।2।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''व्रताचौर्य'' के धारी जानो, संयम पालन करते मानो।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''ब्रह्मचर्य व्रत'' धारी गाए, शिवमग-चारी आप कहाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परिग्रह चौबिस भेद बताए, जिससे विरहित साधू गाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रहमहाव्रतसहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''ईर्या समिति'' के धारी गाए, साधू रत्नत्रय को पाए।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''भाषा समिति'' के धारी जानो, अविकारी साधू हों मानो।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते ''समिति ऐषणा'' धारी, शुभ रत्नत्रय धार अनगारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ ह्रीं ऐषणा सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

''समिति आदान निक्षेपण'' गाई, साधू पालन करते भाई।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि ''व्युत्सर्ग समिति'' के धारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
सुर नर जिनकी महिमा गाते, जिनपद हम भी अर्घ्य चढ़ाते।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति सहित श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द-मोतियादाम)

प्रभू जी मन गुप्ती को धार, कर्म का करते क्षण में क्षार।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।।11।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वचन गुप्ती धारी ऋषिराज, कहाए तारण तरण जहाज।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।।12।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू जी काय गुप्ति को धार, कहाए तारण तरण जहाज।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।।13।।

ॐ ह्रीं कायगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समाधी मरण करें जिन संत, कर्म का करते हैं जो अंत।
चरण में जिनके नमन त्रिकाल, चढ़ाने लाए अर्घ्य विशाल।।14।।

ॐ ह्रीं कायगुप्ति प्राप्त श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - तेरह विध चारित्र धर, साधु समाधि धार।
शिवपद के राही चरण, वंदन बारंबार।।

ॐ ह्रीं तेरह विध चारित्र एवं साधु समाधि युत सर्व साधुभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप - ॐ ह्रीं सुखचिंता मणि व्रताराध्य श्री अरहंत जिनाय नमः।

जयमाला

दोहा - सुखचिंता मणि व्रत रहा, सर्व सुखों की खान।
भाव सहित जो भी करें, पावें सौख्य निधान।।

(ज्ञानोदय-छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं।।1।।
देव शास्त्र गुरु के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते हैं।।

केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन।।2।।
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं।।
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें।।3।।
गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न बर्साते हैं।
गर्भ कल्याणक के अवशर पर, मेरु पे न्हवन कराते हैं।।
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहस्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय-जय कार लगाते हैं।।4।।
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
श्री जिनवर की वाणी पावन, जिनवाणी है महति महान।
जिसका श्रमण पठन कर प्राणी, कर लेते हैं निज कल्याण।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु को, गुरु की संज्ञा है सम्प्राप्त।
जिनकी अर्चा करने वाले, अनुक्रम से होते हैं आप्त।।

दोहा - तेरह विध चारित्र धर, करें समाधि संत।
कर्म घातिया नाश कर, बनते हैं अर्हंत।।

ॐ ह्रीं सुखचिंता मणि व्रताराध्य चतुर्विंशति जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - देव शास्त्र गुरुवर तथा, चौबीसों तीर्थेश।
तीन लोक में पूज्य हैं, त्रिभुवन पति अवशेष।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी का अर्घ्य

पिच्छी कमण्डलधारी गुरुवर, केशलोंच जो करते हैं।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, बाईस परीषह सहते हैं।।
आत्म ध्यान जो करते रहते, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।
पूजा विधान अनेकों रचकर, भक्तों से करवाते हैं।।
विशाल हृदय के धारी गुरुवर, सबके संकट हरते हैं।
हाथ जोड़कर विशद गुरु को, नमन सभी हम करते हैं।।

ॐ ह्रीं साहित्य रत्नाकर क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज

पूर्व नाम : रमेश चन्द जैन

पिता स्व. श्री नाथूराम जैन, माता – श्रीमति इन्दर देवी जैन

जन्म	-	चैत्र कृष्ण चतुर्दशी, 11 अप्रेल, 1964, कुपी-छतरपुर
ऐलक दीक्षा	-	मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमी, 18 दिसम्बर, 1993, श्रेयांसगिरि (प)
मुनि दीक्षा	-	फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी, 8 फरवरी, 1996, द्रोणगिरि (छतरपुर)
आचार्य पद	-	माघ शुक्ल बसंत पंचमी, 13 फरवरी, 2005 मालपुरा (राज.)

Design & Print By : Basant Jain, Saraswati Printer, Chandi Ki Taksal, Jaipur
Mob.: 8114417253, Email : jainbasant02@gmail.com